GENERAL HINDI (सामान्य हिन्दी)

Contents-

वाक्य अशुद्धि शोधन	समास
काल	संधि
क्रिया	हिंदी ध्वनियाँ
अल्पप्राण और महाप्राण	अव्यय
लिंग	वाक्यांश के लिए एक शब्द
विशेषण	उच्चारणगत अशुद्धियाँ
अलंकार	पक्ष
संज्ञा	वचन
उपसर्ग	अनेकार्थी शब्द
प्रत्यय	श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द
तत्सम एवं तदभव शब्द	पर्यायवाची
शब्द	हिंदी मुहावरे
कारक	कहावतें तथा लोकोक्तिया
विराम चिन्ह	विलोम
हिंदी वाक्य	एकार्थक शब्द

Copy Right-Sharing or selling of this PDF is violence of copy right if any person will found guilty of this, then we will take a legal action.

Sentence Errors Correction (वाक्य अशुद्धि शोधन)

वाक्य अशुद्धि शोधन = सार्थक एवं पूर्ण विचार व्यक्त करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहा जाता है ! प्रत्येक भाषा का मूल ढांचा वाक्यों पर ही आधारित होता है ! इसलिए यह अनिवार्य है कि वाक्य रचना में पद -क्रम और अन्वय का विशेष ध्यान रखा जाए ! इनके प्रति सावधान न रहने से वाक्य रचना में कई प्रकार की भूलें हो जाती हैं !
वाक्य रचना के लिए अभ्यास की परम आवश्यकता होती है ! जैसे -

1 - **संज्ञा सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- वह आंख से काना है ।	वह काना है ।
- आप शनिवार के दिन चले जाएं ।	आप शनिवार को चले जाएं ।

2 - **परसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ**=

अशुद्ध	शुद्ध
- आप भोजन किया ?	आपने भोजन किया ।
- उसने नहाया ।	वह नहाया ।

3 - **लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- हमारी नाक में दम है ।	हमारे नाक में दम है ।
- मुझे आदेश दी ।	मुझे आदेश दिया ।

4 - **वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- उसे दो रोटी दे दो ।	उसे दो रोटियां दे दो ।
- मेरा कान मत खाओ ।	मेरे कान मत खाओ ।

5 - **सर्वनाम सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध

- तुम तुम्हारे रास्ते लगो ।	तुम अपने रास्ते लगो ।
- हमको क्या ?	हमें क्या ?

6 - **विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- मुझे छिलके वाला धान चाहिए ।	मुझे धान चाहिए ।
- एक गोपनीय रहस्य ।	एक रहस्य ।

7 - **क्रिया सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- उसे हरि को पटक डाला ।	उसने हरि को पटक दिया ।
- वह चिल्ला उठा ।	वह चिल्ला पड़ा ।

8 - **मुहावरे सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- वह श्याम पर बरस गया ।	वह श्याम पर बरस पड़ा ।
- उसकी अक्ल चक्कर खा गई ।	उसकी अक्ल चकरा गई ।

9 - **क्रिया विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- वह लगभग रोने लगा ।	वह रोने लगा ।
- उसका सर नीचे था ।	उसका सर नीचा था ।

10 - **अव्यय सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- वे संतान को लेकर दुखी थे ।	वे संतान के कारण दुखी थे ।
- वहां अपार जनसमूह एकत्रित था ।	वहां अपार जन -समूह एकत्र था ।

11 - **वाक्यगत सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- तलवार की नोक पर -	तलवार की धार पर -
- मेरी आयु बीस की है ।	मेरी अवस्था बीस वर्ष की है ।

12 - **पुनरुक्ति सम्बन्धी अशुद्धियाँ** =

अशुद्ध	शुद्ध
- मेरे पिता सज्जन पुरुष हैं ।	मेरे पिता सज्जन हैं ।
- वे गुनगुने गर्म पानी से स्नान करते हैं ।	वे गुनगुने पानी से स्नान करते हैं ।

काल (TENSE) - क्रिया के करने या होने के समय को काल कहते हैं काल के तीन भेद हैं -

1- भूतकाल - ' भूत का अर्थ है - बीता हुआ । क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का व्यापार पहले समाप्त हो चुका है , वह भूतकाल कहलाता है ; जैसे -

सीता ने खाना पकाया । इस वाक्य से क्रिया के समाप्त होने बोध होता है।अत: यहां भूतकाल क्रिया का प्रयोग हुआ है !

2- वर्तमान काल - वर्तमान का अर्थ है - उपस्थित अर्थात जिस क्रिया से इस बात की सूचना मिले कि क्रिया का व्यापार अभी भी चल रहा है , समाप्त नहीं हुआ , उसे वर्तमान काल कहते हैं ; जैसे - मोहन गाता है ।

3- भविष्यत काल - भविष्यत का अर्थ है - आने वाला समय । अत: क्रिया के जिस रूप से भविष्यत में क्रिया होने का बोध हो , उसे भविष्यत काल की क्रिया कहते हैं;

जैसे - सीता कल दिल्ली जाएगी । (गा , गे , गी भविष्यत काल के परिचायक चिन्ह हैं !)

वाच्य :-क्रिया के जिस रूपांतर से यह बोध हो कि क्रिया द्वारा किए गए विधान का केंद्र बिंदु कर्ता है , कर्म अथवा क्रिया -भाव , उसे वाच्य कहते हैं !

वाच्य के तीन भेद हैं -

1-कर्तृवाच्य -जिसमें कर्ता प्रधान हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं !

कर्तृवाच्य में क्रिया के लिंग , वचन आदि कर्ता के समान होते हैं , जैसे - सीता गाना गाती है , इस वाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है !

कभी -कभी कर्ता के साथ ' ने ' चिन्ह नहीं लगाया जाता !

2-कर्मवाच्य -जिस वाक्य में कर्म प्रधान होता है , उसे कर्मवाच्य कहते हैं !

कर्मवाच्य में क्रिया के लिंग , वचन आदि कर्म के अनुसार होते हैं , जैसे - रमेश से पुस्तक लिखी जाती है ! इसमें केवल ' सकर्मक ' क्रियाओं का प्रयोग होता है !

3-भाववाच्य -जिस वाक्य में भाव प्रधान होता है , उसे भाववाच्य कहते हैं !

भाववाच्य में क्रिया की प्रधानता रहती है , इसमें क्रिया सदा एक वचन , पुल्लिंग और अन्य पुरुष में आती है ! इसका प्रयोग प्राय: निषेधार्थ में होता है ,

जैसे - चला नहीं जाता , पीया नहीं जाता !

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना :-

	(कर्तृवाच्य)		(कर्मवाच्य)
1-	रीमा चित्र बनाती है !	-	रीमा द्वारा चित्र बनाया जाता है !
2-	मैंने पत्र लिखा !	-	मुझसे पत्र लिखा गया !

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना :-

	(कर्तृवाच्य)		(भाववाच्य)
1-	मैं नहीं पढ़ता !	-	मुझसे पढ़ा नहीं जाता !
2-	राम नहीं रोता है !	-	राम से रोया नहीं जाता !

(Verb) क्रिया :- जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाय , उसे क्रिया कहते हैं ! जैसे -खाना,पीना ,सोना,रहना,जाना,आदि

क्रिया के **दो** भेद हैं :-

1- **<u>सकर्मक क्रिया</u>** :- जो क्रिया कर्म के साथ आती है , उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं !

जैसे - मोहन फल **खाता** है ! (खाना क्रिया के साथ कर्म फल है)

2- **<u>अकर्मक क्रिया</u>** :- अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता तथा उसका फल कर्ता पर पड़ता है !

जैसे - राधा **रोती** है ! (कर्म का अभाव है तथा रोती है क्रिया का फल राधा पर पड़ता है)

रचना के आधार पर क्रिया के **पाँच** भेद है :-

1- **<u>सामान्य क्रिया</u>** :-वाक्य में केवल एक क्रिया का प्रयोग ! जैसे - तुम **चलो** , मोहन **पढ़ा** आदि !

2- **<u>संयुक्त क्रिया</u>** :- दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनी क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ होती है ! जैसे - गीता स्कूल **चली गई** आदि !

3- **<u>नामधातु क्रियाएँ</u>** :- क्रिया को छोड़कर दुसरे शब्दों (संज्ञा , सर्वनाम , एवं विशेषण) से जो धातु बनते है , उन्हें नामधातु क्रिया कहते है जैसे - अपना - **अपनाना** , गरम - **गरमाना** आदि !

4- **<u>प्रेरणार्थक क्रिया</u>** :- कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को करने की प्रेरणा देता है जैसे - **लिखवाया** , **पिलवाती** आदि !

5- **<u>पूर्वकालिक क्रिया</u>** :- जब कोई कर्ता एक क्रिया समाप्त करके दूसरी क्रिया करता है तब पहली क्रिया ' पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है जैसे - वे **पढ़कर चले गये** , मैं **नहाकर जाउँगा** आदि !

अल्पप्राण और महाप्राण :- जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से कम श्वास निकले उन्हें '**अल्पप्राण** ' कहते हैं ! और जिनके उच्चारण में अधिक श्वास निकले उन्हें ' **महाप्राण** 'कहते हैं! ये वर्ण इस प्रकार है -

अल्पप्राण	**महाप्राण**
क , ग , ङ	ख , घ
च , ज , ञ	छ , झ
ट , ड , ण	ठ , ढ
त , द , न	थ , ध
प , ब , म	फ , भ
य , र , ल , व	श , ष , स , ह

Ling (Gender) (लिंग) :- संज्ञा के जिस रूप से किसी जाति का बोध होता है ,उसे लिंग कहते हैं !

इसके **दो** भेद होते हैं :-

(१) पुल्लिंग (Masculine Gender)

(२) स्त्रीलिंग (Feminine Gender)

(३) नपुंसक लिंग (Neuter Gender)

1- **पुल्लिंग** :- जिस संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है , उसे पुल्लिंग कहते हैं - जैसे - बेटा , राजा आदि !

2- **स्त्रीलिंग** :- जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं - जैसे - बेटी , रानी आदि !

स्त्रीलिंग प्रत्यय -

पुल्लिंग शब्द को स्त्रीलिंग बनाने के लिए कुछ प्रत्ययों को शब्द में जोड़ा जाता है जिन्हें **स्त्री प्रत्यय** कहते हैं ! जैसे -

1. **ई** = बड़ा - बड़ी , भला - भली
2. **इनी** = योगी - योगिनी , कमल - कमलिनी
3. **इन** = धोबी - धोबिन , तेली - तेलिन
4. **नी** = मोर - मोरनी , चोर - चोरनी
5. **आनी** = जेठ - जेठानी , देवर - देवरानी
6. **आइन** = ठाकुर - ठकुराइन , पंडित - पंडिताइन
7. **इया** = बेटा - बिटिया , लोटा - लुटिया

कुछ शब्द अर्थ की द्रष्टि से समान होते हुए भी लिंग की द्रष्टि से भिन्न होते हैं ! उनका उचित प्रयोग करना चाहिए !जैसे -

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
1. कवि	कवयित्री

2.	विद्वान	विदुषी
3.	नेता	नेत्री
4.	महान	महती
5.	साधु	साध्वी

(ऊपर दिए गए शब्दों का सही प्रयोग करने पर ही शुद्ध वाक्य बनता है !)

जैसे :- 1- वह एक **विद्वान लेखिका** है - (अशुद्ध वाक्य)
वह एक **विदुषी लेखिका** है - (शुद्ध वाक्य)

नोट-प्राणीवाचक संज्ञाओ का लिंग निर्णय आसान है,परन्तु अप्राणीवाचक (वस्तु) संज्ञाओ के लिंग निर्णय में परेशानी होती है, क्योंकि हिन्दी व्याकरण में निर्जीव वस्तुओं को भी पुरूष या स्त्री लिंगो में बाटा जाता है। प्रायः प्रयोग या आवश्यकता के आधार पर लिंग की पहचान हो जाती है,फिरभी कुछ ऐसे प्राणीवाचक
शब्द होते है,जिन्हें हमेशा स्त्रीलिंग तथा पुलिंग में ही प्रयोग किया जाता है। कुछ संज्ञा शब्द इन नियमों के अपवाद भी होते है।

१.कुछ प्राणीवाचक शब्द हमेशा पुलिंग या स्त्रीलिंग में ही प्रयुक्त होते है।
(अ)पुलिंग - कौवा ,खटमल,गीदड़ ,मच्छर ,चीता,चीन,उल्लू आदि।
(ब)स्त्रीलिंग - सवारी ,गुडिया,गंगा ,यमुना ।
२.पर्वतों के नाम पुलिंग होते है। जैसे-हिमालय ,विन्द्याचल ,सतपुडा आदि।
३.देशों के नाम हमेशा पुलिंग होते है।
जैसे -भारत ,चीन,इरान ,अमेरिका आदि।
४.महीनो के नाम हमेशा पुलिंग होते है ।जैसे -चैत,वैसाख ,जनवरी ,फरवरी आदि।
५.दिनों के नाम हमेशा पुलिंग होते है ।
जैसे - सोमवार,बुधवार,शनिवार आदि।
६.नक्षत्र -ग्रहों के नाम पुलिंग होतेहै । जैसे -सूर्य,चन्द्र,राहू ,शनि आदि।
७.नदियों के नाम हमेशा स्त्रीलिंग होते है। जैसे -गंगा ,जमुना,कावेरी आदि।
८.भाषा-बोलियों के नाम हमेशा स्त्रीलिंग होते है। जैसे -हिन्दी ,उर्दू ,पंजाबी,अरबी,अवधी,पहाडी आदि।
९."अ' से अंत होने वाले शब्द पुलिंग होते है तथा "ई' ,आई ,इन ,इया आदि से समाप्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते है। जैसे :- फल ,फूल,चित्र ,चीन आदि पुलिंग शब्द है । लकड़ी ,कहानी ,नारी,लेखनी,गुडिया,खटिया आदि स्त्रीलिंग शब्द है।
१०.धातुओं ,अनाज ,द्रव्य ,पदार्थ तथा शरीर के अंगो के नाम पुलिंग होते है। जैसे -सोना,तांबा ,पानी,तेल,दूध, आदि।

११.कुछ

संज्ञा शब्दों में मादा या नर लगाकर लिंग का प्रयोग किया जाता है।

भेडिया-मादा भेडिया

नर खरगोश -मादा खरगोश

नर छिपकली - मादा छिपकली

नोट - जिस संज्ञा शब्द का लिंग ज्ञात करना हो ,उसे पहले बहुवचन में बदल लिजिए। बहुवचन में बदल लेने पर

यदि शब्द के अंत में "एँ" या "आँ" आता है,तो वह शब्द स्त्रीलिंग है, यदि एँ या आँ नही आता ,तो वह शब्द पुलिंग है

उदाहरण:-

पंखा-पंखे -आँ या एँ नही आया–पुलिंग

चाबी -चाबियाँ- आँ आया है –स्त्रीलिंग

नोट - कुछ शब्द अर्थ की द्रष्टि से समान होते हुए भी लिंग की द्रष्टि से भिन्न होते हैं । उनका उचित प्रयोग करना चाहिए ।

उदाहरण :

पुल्लिंग - स्त्रीलिंग

कवि - कवयित्री

विद्वान - विदुषी

नेता - नेत्री

महान - महती

साधु - साध्वी

नोट - नीचे

लिखे शब्द पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों मे एक समान प्रयुक्त होते है -

मित्र, शिशु, पवन, बर्फ, ग्राहक, चित्रकार, श्वास, मंत्री,मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, डाक्टर, प्रिंसिपल, मैनेजर ।

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
दादा	दादी	बालक	बालिका
घोड़ा	घोड़ी	शिष्य	शिष्या
छात्र	छात्रा	बाल	बाला
धोबी	धोबिन	पंडित	पंडिताइन
हाथी	हथिनी	ठाकुर	ठाकुराइन
नर	मादा	पुरुष	स्त्री
युवक	युवती	सम्राट	सम्राज्ञी

मोर	मोरनी	युवक	युवती
सिंह	सिंहनी	सेवक	सेविका
अध्यापक	अध्यापिका	पाठक	पाठिका
लेखक	लेखिका	दर्जी	दर्जिन
ग्वाला	ग्वालिन	मालिक	मालकिन
शेर	शेरनी	उँट	उँट्नी
गायक	गायिका	शिक्षक	शिक्षिका
कवि	कवयित्री	वर	वधू
विद्वान	विदुषी	श्रीमान	श्रीमति
हंस	हंसनी	पुजारी	पुजारिन
भेड़	भेड़ा	नाग	नागिन
पड़ोसी	पड़ोसिन	मामा	मामी
श्रीमान	श्रीमति	बलवान	बलवती
नर तितली	तितली	भेड़िया	मादा भेड़िया
नर मक्खी	मक्खी	कछुआ	मादा कछुआ
नर चील	चील	खरगोश	मादा खरगोश
नर चीता	चीता	भालू	मादा भालू
नर मछली	मछली		

Visheshan (Adjectives) (विशेषण) : जो किसी **संज्ञा** या **सर्वनाम** की विशेषता बताता है उसे विशेषण कहते हैं।

जैसे: **मोटा** आदमी, **नीला** आसमान आदि।
विशेषण के **चार** भेद होते हैं:

1. **गुणवाचक विशेषण** : जो शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, रंग, आकार, अवस्था, स्तिथि, स्वभाव, दशा, दिशा, स्पर्श, गंध, स्वाद आदि का बोध कराये, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे काला, गोरा, अच्छा, सुंदर, ख़राब, गीला , रोगी, छोटा, कठोर, कोमल , खट्टा, नमकीन, बिहारी, सुगन्धित आदि।

2. **परिमाणवाचक विशेषण**: वह विशेषण जो अपने विशेष्यों की निश्चित या अनिश्चित मात्रा का बोध कराए।

इसके **दो** भेद होते हैं

1. **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण**:- जहाँ नाप, तोल या माप निश्चित हो, जैसे **एक** किलो चीनी, **दो** मीटर कपडा।

2. **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण**: :- जहाँ नाप, तोल या माप अनिश्चित हो जैसे **थोड़ी** चीनी, **कुछ** लकड़ी।

3. **संख्यावाचक विशेषण** :- संख्या संबंधी विशेषता बताने वाले शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

ये **दो** प्रकार के होते हैं:

1. **निश्चित संख्यावाचक विशेषण**: जहाँ संख्या निश्चित हो, जैसे **पांच** लड़के, **दो** छात्र।
2. **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण**: जहाँ संख्या अनिश्चित हो जैसे **सैंकड़ों** लोग, **अनेक** लडकियां।

4. **सार्वनामिक विशेषण** :- वे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा शब्द से पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं, सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं, जैसे

कौन लोग आये हैं ?

Alankaar (Figure of Speech) (अलंकार) " काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व अलंकार कहे जाते हैं !

अलंकार के **तीन** भेद हैं -

1. शब्दालंकार - ये शब्द पर आधारित होते हैं ! प्रमुख शब्दालंकार हैं - अनुप्रास , यमक , शलेष , पुनरुक्ति , वक्रोक्ति आदि !

2. अर्थालंकार - ये अर्थ पर आधारित होते हैं ! प्रमुख अर्थालंकार हैं - उपमा , रूपक , उत्प्रेक्षा, प्रतीप , व्यतिरेक , विभावना , विशेषोक्ति ,अर्थान्तरन्यास , उल्लेख , दृष्टान्त, विरोधाभास , भ्रांतिमान आदि

3.उभयालंकार- उभयालंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित रहकर दोनों को चमत्कृत करते हैं!

1- उपमा - जहाँ गुण , धर्म या क्रिया के आधार पर उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है

जैसे -

हरिपद कोमल कमल से ।

हरिपद (उपमेय)की तुलना कमल (उपमान) से कोमलता के कारण की गई ! अत: उपमा अलंकार है !

2- <u>रूपक</u> - जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है ! जैसे -

अम्बर पनघट में डुबो रही ताराघट उषा नागरी ।

आकाश रूपी पनघट में उषा रूपी स्त्री तारा रूपी घड़े डुबो रही है ! यहाँ आकाश पर पनघट का , उषा पर स्त्री का और तारा पर घड़े का आरोप होने से रूपक अलंकार है !

3- <u>उत्प्रेक्षा</u> - उपमेय में उपमान की कल्पना या सम्भावना होने पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है !
जैसे -

मुख मानो चन्द्रमा है ।

यहाँ मुख (उपमेय) को चन्द्रमा (उपमान) मान लिया गया है ! यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है !
इस अलंकार की पहचान मनु , मानो , जनु , जानो शब्दों से होती है !

4- <u>यमक</u> - जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो और उसके अर्थ अलग -अलग हों वहाँ यमक अलंकार होता है ! जैसे -

सजना है मुझे सजना के लिए ।

यहाँ पहले सजना का अर्थ है - श्रृंगार करना और दूसरे सजना का अर्थ - नायक शब्द दो बार प्रयुक्त है ,अर्थ अलग -अलग हैं ! अत: यमक अलंकार है !

5- <u>श्लेष</u> - जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो , किन्तु प्रसंग भेद में उसके अर्थ एक से अधिक हों , वहां शलेष अलंकार है ! जैसे -

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून ।
पानी गए न ऊबरै मोती मानस चून ।।

यहाँ पानी के तीन अर्थ हैं - कान्ति , आत्म - सम्मान और जल ! अत: शलेष अलंकार है , क्योंकि पानी शब्द एक ही बार प्रयुक्त है तथा उसके अर्थ तीन हैं !

6- <u>विभावना</u> - जहां कारण के अभाव में भी कार्य हो रहा हो , वहां विभावना अलंकार है !जैसे -

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना ।

वह (भगवान) बिना पैरों के चलता है और बिना कानों के सुनता है ! कारण के अभाव में कार्य होने से यहां विभावना अलंकार है !

7- <u>अनुप्रास</u> - जहां किसी वर्ण की अनेक बार क्रम से आवृत्ति हो वहां अनुप्रास अलंकार होता है ! जैसे -

भूरी -भूरी भेदभाव भूमि से भगा दिया ।

' भ ' की आवृत्ति अनेक बार होने से यहां अनुप्रास अलंकार है !

8- <u>भ्रान्तिमान</u> - उपमेय में उपमान की भ्रान्ति होने से और तदनुरूप क्रिया होने से भ्रान्तिमान अलंकार होता है ! जैसे -

नाक का मोती अधर की कान्ति से , बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से,
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है, सोचता है अन्य शुक यह कौन है ?

यहां नाक में तोते का और दन्त पंक्ति में अनार के दाने का भ्रम हुआ है , यहां भ्रान्तिमान अलंकार है

9- <u>सन्देह</u> - जहां उपमेय के लिए दिए गए उपमानों में सन्देह बना रहे तथा निशचय न हो सके, वहां सन्देह अलंकार होता है !जैसे -

सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है ।
सारी ही की नारी है कि नारी की ही सारी है ।

10- <u>व्यतिरेक</u> - जहां कारण बताते हुए उपमेय की श्रेष्ठता उपमान से बताई गई हो , वहां व्यतिरेक अलंकार होता है !जैसे -

का सरवरि तेहिं देउं मयंकू । चांद कलंकी वह निकलंकू ।।

मुख की समानता चन्द्रमा से कैसे दूं ? चन्द्रमा में तो कलंक है , जबकि मुख निष्कलंक है !

11- <u>असंगति</u> - कारण और कार्य में संगति न होने पर असंगति अलंकार होता है ! जैसे -

हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै ।

घाव तो लक्ष्मण के हृदय में हैं , पर पीड़ा राम को है , अत: असंगति अलंकार है !

12- <u>प्रतीप</u> - प्रतीप का अर्थ है उल्टा या विपरीत । यह उपमा अलंकार के विपरीत होता है । क्योंकि इस अलंकार में उपमान को लज्जित , पराजित या हीन दिखाकर उपमेय की श्रेष्टता बताई जाती है ! जैसे -

सिय मुख समता किमि करै चन्द वापुरो रंक ।

सीताजी के मुख (उपमेय)की तुलना बेचारा चन्द्रमा (उपमान)नहीं कर सकता । उपमेय की श्रेष्टता प्रतिपादित होने से यहां प्रतीप अलंकार है !

13- <u>दृष्टान्त</u> - जहां उपमेय , उपमान और साधारण धर्म का बिम्ब -प्रतिबिम्ब भाव होता है,जैसे-

बसै बुराई जासु तन ,ताही को सन्मान ।
भलो भलो कहि छोड़िए ,खोटे ग्रह जप दान ।।

यहां पूर्वार्द्ध में उपमेय वाक्य और उत्तरार्द्ध में उपमान वाक्य है ।इनमें ' सन्मान होना ' और ' जपदान करना ' ये दो भिन्न -भिन्न धर्म कहे गए हैं । इन दोनों में बिम्ब -प्रतिबिम्ब भाव है । अत: दृष्टान्त अलंकार है !

14- <u>अर्थान्तरन्यास</u> - जहां सामान्य कथन का विशेष से या विशेष कथन का सामान्य से समर्थन किया जाए , वहां अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है ! जैसे -

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग ।।

15- <u>विरोधाभास</u> - जहां वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास मालूम पड़े , वहां विरोधाभास अलंकार होता है ! जैसे -

या अनुरागी चित्त की गति समझें नहीं कोइ ।
ज्यों -ज्यों बूडै स्याम रंग त्यों -त्यों उज्ज्वल होइ ।।

यहां स्याम रंग में डूबने पर भी उज्ज्वल होने में विरोध आभासित होता है , परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है । अत: विरोधाभास अलंकार है !

16- <u>मानवीकरण</u> - जहां जड़ वस्तुओं या प्रकृति पर मानवीय चेष्टाओं का आरोप किया जाता है , वहां मानवीकरण अलंकार है ! जैसे -

फूल हंसे कलियां मुसकाई ।

यहां फूलों का हंसना , कलियों का मुस्कराना मानवीय चेष्टाएं हैं , अत: मानवीकरण अलंकार है!

17- <u>अतिशयोक्ति</u> - अतिशयोक्ति का अर्थ है - किसी बात को बढ़ा -चढ़ाकर कहना । जब काव्य में कोई बात बहुत बढ़ा -चढ़ाकर कही जाती है तो वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है !जैसे -

लहरें व्योम चूमती उठतीं ।

यहां लहरों को आकाश चूमता हुआ दिखाकर अतिशयोक्ति का विधान किया गया है !

18- <u>वक्रोक्ति</u> - जहां किसी वाक्य में वक्ता के आशय से भिन्न अर्थ की कल्पना की जाती है , वहां वक्रोक्ति अलंकार होता है !

- इसके **दो** भेद होते हैं - (1) काकु वक्रोक्ति (2) शलेष वक्रोक्ति ।

1- <u>काकु वक्रोक्ति</u> - वहां होता है जहां वक्ता के कथन का कण्ठ ध्वनि के कारण श्रोता भिन्न अर्थ लगाता है । जैसे -

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू ।

2- <u>शलेष वक्रोक्ति</u> - जहां शलेष के द्वारा वक्ता के कथन का भिन्न अर्थ लिया जाता है ! जैसे -

को तुम हौ इत आये कहां घनस्याम हौ तौ कितहूं बरसो ।
चितचोर कहावत हैं हम तौ तहां जाहुं जहां धन है सरसों ।।

19- <u>अन्योक्ति</u> - अन्योक्ति का अर्थ है अन्य के प्रति कही गई उक्ति । इस अलंकार में अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का वर्णन किया जाता है ! जैसे -

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल ।

अली कली ही सौं बिध्यौं आगे कौन हवाल ।।

यहां भ्रमर और कली का प्रसंग अप्रस्तुत विधान के रूप में है जिसके माध्यम से राजा जयसिंह को सचेत किया गया है , अत: अन्योक्ति अलंकार है !

Sangya (Noun) (संज्ञा)

संज्ञा की परिभाषा - संज्ञा को 'नाम' भी कहा जाता है . किसी प्राणी , वस्तु , स्थान , भाव आदि का 'नाम' ही उसकी संज्ञा कही जाती है .

उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :

"**राजेश** (व्यक्ति) जब **रेलगाड़ी** (वस्तु) से **शिमला** (स्थान) गया तो उसे बहुत **प्रसन्नता** (भाव) हुई." इस वाक्य में **'राजेश', 'रेलगाड़ी', 'शिमला'** और **'प्रसन्नता'** सभी संज्ञा के उदाहरण हैं.

संज्ञा **तीन** प्रकार की होती है.

१. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** - जो किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध कराती है, यथा - सीता, युमना, आगरा.

२. **जातिवाचक संज्ञा** - जो संज्ञा किसी जाति का बोध कराती है, जातिवाचक संज्ञा कहलाती है. यथा -नदी , पर्वत.

३. **भाववाचक संज्ञा** - किसी भाव , गुण, दशा आदि का बोध कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा होते है, यथा -मिठास , कालिमा.

Padbandh (Phrases) (पदबंध) - जब एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं , तब उस बंधी हुई इकाई को पदबंध कहते हैं ! जैसे - **सबसे तेज दौड़ने वाला घोड़ा जीत गया** !

पदबंध के **पाँच** भेद होते हैं -

1- **संज्ञा पदबंध** - जब एक से अधिक पद मिलकर संज्ञा का काम करें ,तो उस पदबंध को संज्ञा पदबंध कहते हैं ! संज्ञा पदबंध के शीर्ष में संज्ञा पद होता है , अन्य सभी पद उस पर आश्रित होते हैं ! जैसे -

दीवार के पीछे खड़ा पेड़ गिर गया ।

इस वाक्य में रेखांकित शब्द संज्ञा पदबंध हैं !

2- **सर्वनाम पदबंध** - जब एक से अधिक पद एक साथ जुड़कर सर्वनाम का कार्य करें तो उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं ! इसके शीर्ष में सर्वनाम पद होता है ! जैसे -

भाग्य की मारी तुम अब कहाँ जाओगी ।

3- **विशेषण पदबंध** - जब एक से अधिक पद मिलकर किसी संज्ञा की विशेषता प्रकट करें , उन्हें विशेषण पदबंध कहते हैं ! इसके शीर्ष में विशेषण होता है ! अन्य पद उस विशेषण पर आश्रित होते हैं ! इसमें प्रमुखतया प्रविशेषण लगता है ! जैसे -

मुझे **चार किलो पिसी हुई** लाल मिर्च ला दो ।

4- **क्रिया पदबंध** - जब एक से अधिक क्रिया पद मिलकर एक इकाई के रूप में क्रिया का कार्य संपन्न करते हैं , वे क्रिया पदबंध कहलाते हैं ! इस पदबंध के शीर्ष में क्रिया होती है !

जैसे -

वह **पढ़कर सो गया है** ।

5- **क्रियाविशेषण पदबंध** - जो पदबंध क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं , उन्हें क्रियाविशेषण पदबंध कहते हैं ! इसमें क्रियाविशेषण शीर्ष पर होता है और प्राय: प्रविशेषण आश्रित पद होते हैं ! जैसे -

मैं **बहुत तेजी से दौड़कर** गया ।

Upsarg (Prefixes) (उपसर्ग) - वे शब्दांश है जो किसी शब्द से पूर्व लगकर उस शब्द का अर्थ बदल देते है उन्हें उपसर्ग कहते हैं ! जैसे -

1- संस्कृत उपसर्ग -

(उपसर्ग)	**(उपसर्ग से निर्मित शब्द)**
1. अति	अतिशय , अत्याचार , अतिसार

2. आ	आजीवन , आकार , आजीविका
3. परि	परिमाप , परिचय , परिमाण
4. नि	निपुण , निगम , निबन्ध
5. उप	उपकार , उपमान , उपयोग

2- <u>हिन्दी के उपसर्ग</u>

(उपसर्ग)	**(उपसर्ग से निर्मित शब्द)**
1. अ	अचेत , अमर , अशान्त
2. अन	अनमोल , अनजान , अनाचार
3. भर	भरसक , भरमार , भरपेट
4. दु	दुबला , दुगना , दुसह
5. उन	उनासी , उनतीस , उनचास

3- <u>अरबी - फारसी के उपसर्ग</u>

(उपसर्ग)	**(अर्थ)**	**(नवीन शब्द)**
1. अल	अलमस्त	अलबत्ता , अलबेला
2. बद	हीनता	बदतमीज , बदबू
3. कम	अल्प	कमजोर, कमसिन
4. ब	अनुसार	बनाम , बदौलत
5. हम	साथ	हमराज , हमसफर

4- <u>अंग्रेजी के उपसर्ग</u>

(उपसर्ग)	(उपसर्ग से निर्मित शब्द)
1. हाफ	हाफ पेण्ट , हाफ बाडी
2. सब	सब -पोस्टमास्टर , सब -इन्सपेक्टर
3. चीफ	चीफ मिनिस्टर
4. जनरल	जनरल मैनेजर
5. हैड	हैड मुंशी , हैड पंडित

5- <u>उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होने वाले अन्य अव्यय</u>

1. का / कु - कापुरुष , कुपुत्र
2. चिर - चिरकाल , चिरायु
3. सह - सहचर , सहकर्मी
4. अ / अन - अनीति , अधर्म , अनन्त
5. अन्तर - अन्तर्नाद , अन्तर्ध्यान

Pratyya (Suffixes) (प्रत्यय)

प्रत्यय - प्रत्यय वह शब्दांश है , जिसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता और जो किसी शब्द के पीछे लगकर उसके अर्थ में विशिष्टता या परिवर्तन ला देते है ! शब्दों के पश्चात जो अक्षर या अक्षर समूह लगाया जाता है उसे प्रत्यय कहते है

1- कृत प्रत्यय -

1. अन - मनन , चलन

2. आ - लिखा , भूला

3. आव - बहाव , कटाव

4. इयल - मरियल , अड़ियल

5. ई - बोली , हँसी

6. उक - इच्छुक, भिक्षुक

7. कर - जाकर , गिनकर

8. औती - मनौती , फिरौती

9. आवना - डरावना , सुहावना

10. वाई - सुनवाई , कटवाई

2- तद्धित प्रत्यय -

1. ईन - ग्रामीण , कुलीन

2. त: - अत: , स्वत:

3. आई - पण्डिताई , ठकुराई

4. क - चमक , धमक

5. इल - फेनिल , जटिल

6. सा - ऐसा , वैसा

7. ऐरा - बहुतेरा , सवेरा

8. वान - धनवान , गुणवान

9. ल - शीतल , श्यामल

10. मात्र - लेशमात्र , रंचमात्र

तत्सम एवं तदभव शब्द

तत्सम

'तत्सम' शब्द 'तत' और 'सम' के मेल से बना है। इसका अर्थ होता है-उसके समान। जो शब्द संस्कृत भाषा से बिना। किसी परिवर्तन के हिन्दी में प्रयुक्त होता है, उसे 'तत्सम शब्द' कहते हैं।

तत्सम शब्द दो प्रकार के होते हैं- i) परम्परागत तथा ii) निर्मित तत्सम शब्द।

i) परम्परागत परम्परागत तत्सम शब्द वैसे शब्द हैं जो पुराने संस्कृत ग्रंथों में उपलब्ध हैं तथा हिन्दी में उनका प्रयोग स्वाभाविक रूप में किया जाता है।

ii) निर्मित निर्मित तत्मस शब्द वैसे शब्द हैं, जो नये विचारों तथा व्यापारों की अभिव्यक्ति के साथ संस्कृत के शब्दकोश में जुड़ते चले गए।हिन्दी में उनका प्रयोग उसी रूप में होता है।

तदभव 'तदभव' शब्द 'तद' और 'भव' से मिलकर बना है। इसका अर्थ होता है- विकसित अथवा उससे उत्पन्न; अर्थात वैसे शब्द जो संस्कृत से उत्पन्न या उससे विकसित हुए हैं, 'तदभव' कहलाते हैं। तदभव शब्द रूप परिवर्तन के साथ संस्कृत से हिन्दी शब्दकोश में आए हैं। ऐसे शब्द संस्कृत, पाली तथा प्राकृत भाषा से परिवर्तित होते हुए हिन्दी में प्रयुक्त हो रहे हैं। संस्कृत से हिन्दी में आए तदभव शब्द ही हिन्दी भाषा की शब्दकोशीय पूँजी है।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में 'तत्सम शब्द के तदभव' या 'तदभव शब्द के तत्सम' रूप पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। यहाँ 'तत्सम' तथा 'तदभव' शब्दों की सूची दी गई है।

तत्सम	**तदभव**
अगम्य	अगम
अक्षर	अच्छर

अमृत	अमिय
अन्ध	अन्धा
अन्धकार	अँधेरा
आम्र	आम
अर्द्ध	आधा
अष्ट	आठ
आश्चर्य	अचरज
अग्नि	आग
अन्न	अनाज
अक्षि	आँख
अश्रु	आँसू
आशीष	असीस
अनर्थ	अनाडी
अग्रणी	अगुवा
अक्षवाट	अखाड़ा
अमृत	अमिय
अंगरक्षक	अँगरखा
अंगुष्ठ	अंगूठा
अक्षोट	अखरोट
अट्टालिका	अटारी
अष्टादश	अठारह
ईर्ष्या	इरषा
इक्षी	ईख
एला	इलायची
उत्साह	उछाह
उपालम्भ	उलाहना
उद्घाटन	उघाड़ना

उपवास	उपास
उलूक	उल्लू
कुपुत्र	कपूत
कपोत	कबूतर
कर्पुर	कपूर
कृष्ण	कान्ह
कर्ण	कान
कपाट	किवाड़
काष्ठ	काठ
कुक्कुर	कुत्ता
कोकिल	कोयल
कृक्षी	कोख
कन्दुक	गेंद
कृषक	किसान
कर्म	काम
कच्छप	कछुआ
कुष्ठ	कोढ़
कूप	कुआँ
स्कन्ध	कन्धा
कदली	केला

Hindi Words (शब्द) :- भाषा की न्यूनतम इकाई वाक्य है और वाक्य की न्यूनतम इकाई शब्द है .

शब्द समूह :- प्रत्येक भाषा का अपना शब्द समूह होता है। इन शब्दों का प्रयोग भाषा के बोलने एवं लिखने में किया जाता है।

सामान्यत: किसी भी भाषा के चार प्रकार के शब्द होते हैं:

1. तत्सम शब्द:- हिंदी में जो शब्द संस्कृत से ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिए गए हैं तथा जिनमें कोई ध्वनि परिवर्तन नहीं हुआ है, तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे राजा ,बालक, लता आदि।

2. तद्भव शब्द:- तद्भव का शाब्दिक अर्थ है तत + भव अर्थात उससे उत्पन्न। हिंदी में प्रयुक्त वह शब्दावली जो अनेक ध्वनि परिवर्तनों से गुज़रती हुई हिंदी में आई है, तद्भव शब्दावली है। जैसे आग, ऊँट, घोडा आदि।

उदाहरण:

संस्कृत शब्द	तद्भव शब्द
अग्नि	आग
उष्ट्र	ऊँट
घोटक	घोड़ा

3. देशज शब्द:- ध्वन्यात्मक अनुकरण पर गढ़े हुए वे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति किसी तत्सम शब्द से नहीं होती, इस वर्ग में आते हैं। हिंदी में प्रयुक्त कुछ देशज शब्द भोंपू , तेंदुआ, थोथा आदि।

4. विदेशी शब्द:- दूसरी भाषाओं से आये हुए शब्द विदेशी शब्द कहे जाते हैं। हिंदी में विदेशी शब्द दो प्रकार के हैं:

- मुस्लिम शासन के प्रभाव से आये हुए
- अरबी फारसी शब्द
- ब्रिटिश शासन के प्रभाव से आये हुए अंग्रेजी शब्द

हिंदी भाषा में लगभग 2500 अरबी शब्द, 3500 फारसी शब्द और 3000 अंग्रेजी शब्द प्रयुक्त हो रहे हैं।

उदाहरण:
आदत, इनाम, नशा, अदा, अगर, पाजी, तोप, तमगा , सराय, अफसर, कलेक्टर, कोट, मेयर, मादाम , पिकनिक , सूप आदि।

Kaarak (Prepositions) (कारक)

जो किसी शब्द का क्रिया के साथ सम्बन्ध बताए वह कारक है !

कारक के आठ भेद हैं :-

जिनका विवरण इस प्रकार है :-

कारक	**कारक चिन्ह**
1. कर्ता	ने
2. कर्म	को
3. करण	से , के द्वारा
4. सम्प्रदान	को , के लिए
5. अपादान	से (अलग करना)
6. सम्बन्ध	का , की , के
7. अधिकरण	में , पर
8. सम्बोधन	हे , अरे

१.**कर्ता कारक** :- वाक्य में कार्य करने वाले को कर्ता कहते है।
जैसे - १.राम ने पत्र लिखा । २.बहन ने खाना पकाया । ३.हम कहाँ जा रहे है ? ।
इन वाक्यों में राम ,बहन तथा हम काम करने वाले है। अतः कर्ता कारक है।

२.**कर्म कारक**:- संज्ञा या सर्वनाम अथवा जिस वस्तु या व्यक्ति पर क्रिया का प्रभाव पड़े उसे कर्म कारक कहते है। जैसे -अध्यापक ,छात्र को पीटता है। इसका चिन्ह को होता है। कहीं - कहीं कर्म का चिन्ह छीपा रहता है। जैसे - सीता फल खाती है।

३.**करण कारक** :- जिस साधन से क्रिया होता है,उसे करण कारक कहते है। जैसे -बच्चा बोतल से दूध पीता है। २.बच्चे गेंद से खेल रहे है। गेंद ,बोतल की सहायता से काम हो रहा है।

४.**सम्प्रदान कारक** :- जिसके लिए कर्ता कुछ कार्य करे ,उसे सम्प्रदान कारक कहते है। जैसे - १.गरीबो को खाना दो। २.मेरे लिए दूध लेकर आओ । यहाँ पर गरीब ,मेरे ,के लिए काम किया जा रहा है। अतः सम्प्रदान कारक है।

५.**अपादान कारक** :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो,वहां अपादान कारक होता है। जैसे- १.पेड़ से आम गिरा। २.हाथ से छड़ी गिर गई। इन वाक्यों में आम ,छड़ी से अलग होने का ज्ञान करा रहे है।

६.**सम्बन्ध कारक** :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सम्बन्ध ज्ञात हो,उसे सम्बन्ध कारक कहते है। जैसे- १.सीतापुर ,मोहन का गाँव है। २.सेना के जवान आ रहे है।इन वाक्यों में मोहन का गओंसे,सेना के जवान आदि शब्दों का आपस में सम्बन्ध होने का पता चलता है।

७.**अधिकरण कारक**:- संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो,उसे अधिकरण कारक कहते है।
जैसे - हरी घर में है। पुस्तक मेज पर है। राम कल आएगा।

८.**संबोधन कारक** :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से बुलाने या पुकारने का बोध हो,उसे संबोधन कारक कहते है। जैसे - १.हे ईश्वर ! रक्षा करो २.अरे! बच्चों शोर मत करो।
अरे,हे ईश्वर ,शब्दों से पता चलता है कि उन्हें संबोधन किया जा रहा है।

कारक के भेद(SHORT TRICKS)

कारक 8 प्रकार के होते हैं कारक को विभक्ति से भी पहचाना जा सकता है :

क्रम	विभक्ति	कारक	चिन्ह (Karak Chinh)
1	प्रथम	कर्ता	ने
2	द्वितीय	कर्म	को
3	तृतीय	करण	से (के द्वारा)
4	चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
5	पंचमी	अपादान	से (अलग होने के लिए)
6	षष्टी	सम्बन्ध	का, की,के, रे
7	सप्तमी	अधिकरण	में, पर
8	अष्टमी	संबोधन	हे, अरे

Examples of Karak

कारक के उदहारण नीचे दिए गए हैं

वाक्य	कारक नाम
राम ने खाना खाया	कर्ता कारक
राम सीता के लिए लंका गए	सम्प्रदान कारक
राम ने रावन को मार दिया	कर्म कारक
राम ने धनुष द्वारा रावण को मारा	करण कारक
रावण का सर जमीं पर गिर पड़ा	अपादान कारक
राम की जय-जयकार होने लगी	सम्बन्ध कारक
हे राम! हमें बचाओ	संबोधन कारक
बिल्ली छत से कूदी	अपादान कारक
लडके दरवाजे-दरवाजे घूम रहे हैं	अधिकरण कारक
नेता द्वार-द्वार जा रहे हैं	अधिकरण कारक
वह कुल्हाड़ी से पेड़ कटता है	करण कारक
माँ ने बच्चों को मिठाई दी	सम्प्रदान कारक
वह चाकू से मरता है	करण कारक
माता ने बच्चों को सुलाया	कर्म कारक
माता ने मुझको पैसे दिए	सम्प्रदान कारक
श्याम ने मोहन को साईकिल दी	सम्प्रदान कारक
गंगा हिमालय से निकलती है	अपादान कारक
वह नदी से पानी ला रहा है	अपादान कारक
उसने गीत गाया	कर्म कारक
तुम्हारे घर में दस लोग हैं	अधिकरण कारक
मेरी बहन	सम्बन्ध कारक
प्रेमचंद का उपन्यास	सम्बन्ध कारक
मैंने उसे पढ़ाया	कर्ता कारक
नदियों का जल स्वच्छ है	सम्बन्ध कारक
गाड़ी में ईधन डालो	अधिकरण कारक
डाकू दुकान का सारा माल ले गए	अपादान कारक

Viraam Chinha (Punctuation) (विराम चिन्ह)

भाषा में स्थान -विशेष पर रुकने अथवा उतार -चढ़ाव आदि दिखाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उन्हें ही ' **विराम चिन्ह** ' कहते है !

1. पूर्ण विराम :- (**।**)

- प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है !

2. उपविराम :- (**:**)

- उपविराम का प्रयोग संवाद -लेखन एकांकी लेखन या नाटक लेखन में वक्ता के नाम के बाद किया जाता है !

3. अर्ध विराम :- (**;**)

- इसमें उपविराम से भी कम ठहराव होता है ! यदि खंडवाक्य का आरंभ वरन, पर , परन्तु , किन्तु , क्योंकि इसलिए , तो भी आदि शब्दों से हो तो उसके पहले इसका प्रयोग करना चाहिए !

4. अल्प विराम :- (**,**)

- इसमें बहुत कम ठहराव होता है !

5. प्रश्नबोधक :- (**?**)

6. विस्मयादिबोधक :- (**!**)

- विस्मय , हर्ष , शोक , घृणा , प्रेम आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्दों के आगे इसका प्रयोग होता है !

7. निर्देशक चिन्ह :- (**_**)

8. योजक चिन्ह :- (**-**)

- द्वन्द्व समास के दो पदों के बीच , सहचर शब्दों के बीच प्रयोग !

9. कोष्ठक चिन्ह :- **( )**

10. उदधरण चिन्ह :- (**" "**)

11. लाघव चिन्ह :- (**o**)

12. विवरण चिन्ह :- (**:-**)

Samaas (Compound) (समास)-दो या **दो से अधिक** शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया को समास कहते हैं !

सामासिक पद को विखण्डित करने की क्रिया को विग्रह कहते हैं !

समास के **छः** भेद हैं -

1- <u>अव्ययीभाव समास</u> - जिस समास में पहला पद प्रधान होता है तथा समस्त पद अव्यय का काम करता है , उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं !जैसे -

	(सामासिक पद)	**(विग्रह)**
1.	यथावधि	अवधि के अनुसार
2.	आजन्म	जन्म पर्यन्त
3.	प्रतिदिन	दिन -दिन
4.	यथाक्रम	क्रम के अनुसार
5.	भरपेट	पेट भरकर

2- <u>तत्पुरुष समास</u> - इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा विभक्ति चिन्हों का लोप हो जाता है ! तत्पुरुष समास के **छः उपभेद** विभक्तियों के आधार पर किए गए हैं -

1. **कर्म** तत्पुरुष

2. **करण** तत्पुरुष

3. **सम्प्रदान** तत्पुरुष

4. **अपादान** तत्पुरुष

5. **सम्बन्ध** तत्पुरुष

6. **अधिकरण** तत्पुरुष

उदाहरण इस प्रकार हैं -

(सामासिक पद)	(विग्रह)	(समास)
1. कोशकार	कोश को करने वाला	कर्म तत्पुरुष
2. मदमाता	मद से माता	करण तत्पुरुष
3. मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय	सम्प्रदान तत्पुरुष
4. भयभीत	भय से भीत	अपादान तत्पुरुष
5. दीनानाथ	दीनों के नाथ	सम्बन्ध तत्पुरुष
6. आपबीती	अपने पर बीती	अधिकरण तत्पुरुष

3- <u>कर्मधारय समास</u> - जिस समास के दोनों पदों में विशेष्य - विशेषण या उपमेय - उपमान सम्बन्ध हो तथा दोनों पदों में एक ही कारक की विभक्ति आये उसे कर्मधारय समास कहते हैं ! जैसे :-

	(सामासिक पद)	(विग्रह)
1.	नीलकमल	नीला है जो कमल
2.	पीताम्बर	पीत है जो अम्बर
3.	भलामानस	भला है जो मानस
4.	गुरुदेव	गुरु रूपी देव
5.	लौहपुरुष	लौह के समान (कठोर एवं शक्तिशाली) पुरुष

4- <u>बहुब्रीहि समास</u> - अन्य पद प्रधान समास को बहुब्रीहि समास कहते हैं !इसमें दोनों पद किसी अन्य अर्थ को व्यक्त करते हैं और वे किसी अन्य संज्ञा के विशेषण की भांति कार्य करते हैं ! जैसे -

	(सामासिक पद)	(विग्रह)
1.	दशानन	दश हैं आनन जिसके (रावण)
2.	पंचानन	पांच हैं मुख जिनके (शंकर जी)
3.	गिरिधर	गिरि को धारण करने वाले (श्री कृष्ण)
4.	चतुर्भुज	चार हैं भुजायें जिनके (विष्णु)
5.	गजानन	गज के समान मुख वाले (गणेश जी)

5- <u>द्विगु समास</u> - इस समास का पहला पद संख्यावाचक होता है और सम्पूर्ण पद समूह का बोध कराता है ! जैसे -

	(सामासिक पद)	(विग्रह)
1.	पंचवटी	पांच वट वृक्षों का समूह
2.	चौराहा	चार रास्तों का समाहार
3.	दुसूती	दो सूतों का समूह
4.	पंचतत्व	पांच तत्वों का समूह

5. त्रिवेणी तीन नदियों (गंगा , यमुना , सरस्वती) का समाहार

6- <u>द्वन्द्व समास</u> - इस समास में दो पद होते हैं तथा दोनों पदों की प्रधानता होती है ! इनका विग्रह करने के लिए (और , एवं , तथा , या , अथवा) शब्दों का प्रयोग किया जाता है !

जैसे -

	(सामासिक पद)	**(विग्रह)**
1.	हानि - लाभ	हानि या लाभ
2.	नर - नारी	नर और नारी
3.	लेन - देन	लेना और देना
4.	भला - बुरा	भला या बुरा
5.	हरिशंकर	विष्णु और शंकर

Samas (समास)SHORT TRICKS

समास का तात्पर्य है “संक्षिप्तीकरण” दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास (Samas) कहते हैं।

उदाहरण
रसोईघर - रसोई के लिए घर।
नीलगाय - नीले रंग की गाय।

समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द (Samasi Shabd) कहलाता है। इसे हम समस्त पद (Samast Pad) भी कहते हैं।

समास के भेद

हिंदी में समास के छः भेद हैं :
(1) अव्ययीभाव समास
(2) तत्पुरुष समास
(3) द्विगु समास
(4) द्वंद्व समास
(5) कर्मधारय समास
(6) बहुव्रीहि समास

अव्ययीभाव समास

इस समास में पहला पद (पूर्व पद) प्रधान होता है और पूरा पद अव्यय होता है इसमें पहला पद उपसर्ग होता है जैसे अ,
आ, अनु, प्रति, हर, भर, नि, निर, यथा, यावत आदि उपसर्ग शब्द का बोध होता है

नोट : अव्ययीभाव समास में उपसर्ग होता है

उदाहरण:
(आजन्म) - जन्म पर्यन्त
(यथावधि) - अवधि के अनुसार
(यथाक्रम) - क्रम के अनुसार
(बेकसूर) -
(निडर) -

तत्पुरुष समास

इस समास में दूसरा पद (उत्तर पद / अंतिम पद) प्रधान होता है इसमें कर्ता और संबोधन कारक को छोड़कर शेष छः
कारक चिन्हों का प्रयोग होता है
जैसे - कर्म कारक, करण कारक, सम्प्रदान कारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक, अधिकरण कारक

नोट : तत्पुरुष समास में कारक चिन्हों का प्रयोग होता है

उदाहरण
(विद्यालय) - विद्या के लिए आलय

(राजपुत्र) - राजा का पुत्र
(मुंहतोड़) - मुंह को तोड़ने वाला
(चिड़ीमार) - चिड़िया को मारने वाला
(जन्मांध) - जन्म से अँधा

<u>द्विगु समास</u>

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक होता है विग्रह करने पर समूह का बोध होता है

नोट : द्विगु समास में संख्या का बोध होता है

उदाहरण
(त्रिलोक) - तीनो लोकों का समाहार
(नवरात्र) - नौ रात्रियों का समूह
(अठन्नी) - आठ आनो का समूह
(दुसूती) - दो सुतों का समूह
(पंचतत्व) - पांच तत्वों का समूह

<u>द्वंद्व समास</u>

इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। विग्रह करने पर बीच में 'और'/ 'या' का बोध होता है

नोट : द्वंद्व समास मेंयोजक चिन्ह (-) और 'या'का बोध होता है

उदाहरण
(पाप-पुण्य) - पाप और पुण्य
(सीता-राम) - सीता और राम
(ऊँच-नीच) - ऊँच और नीच
(खरा-खोटा) - खरा या खोटा
(अन्न-जल) - अन्न और जल

<u>कर्मधारय समास</u>

इसमें समस्त पद सामान रूप से प्रधान होता है इसके लिंग, वचन भी सामान होते हैं इस समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है विग्रह करने पर कोई नया शब्द नहीं बनता

नोट : कर्मधारय समास में व्यक्ति, वस्तु आदि की विशेषता का बोध होता है

उदाहरण

(चन्द्रमुख) - चन्द्रमा के सामान मुख वाला -विशेषता
(दहीवड़ा) - दही में डूबा बड़ा - विशेषता
(गुरुदेव) - गुरु रूपी देव - विशेषता
(चरण कमल) - कमल के समान चरण - विशेषता
(नील गगन) - नीला है जो असमान - विशेषता

बहुव्रीहि समास

इस समास में कोई भी पद प्रधान न होकर अन्य पद प्रधान होता है विग्रह करने पर नया शब्द निकलता है पहला पद
विशेषण नहीं होता है विग्रह करने पर समूह का बोध भी नहीं होता है

नोट : बहुव्रीहि समास के अंतर्गत शब्द का विग्रह करने पर नया शब्द बनता है या नया नाम सामने आता है

उदाहरण

(त्रिनेत्र) - भगवान शिव
(वीणापाणी) - सरस्वती
(श्वेताम्बर) - सरस्वती
गजानन) - भगवान गणेश
(गिरधर) - भगवान श्रीकृष्ण

संधि -संधि शब्द का अर्थ है मेल। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है।

उदाहरण : सम् + तोष = संतोष, देव + इंद्र = देवेंद्र, भानु + उदय = भानूदय ।

संधि के भेद

संधि के मुख्य रूप से तीन भेद होते हैं :

(१) स्वर संधि (Swar Sandhi)

(२) व्यंजन संधि (Vyanjan Sandhi)

(३) विसर्ग संधि (Visarg Sandhi)

स्वर संधि (Swar Sandhi)

दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर-संधि कहते हैं।

उदाहरण : विद्या + आलय = विद्यालय ।

स्वर संधि को निम्नलिखित पाँच भागों में विभाजित किया गया है :_

दीर्घ संधि (Dirgh Sandhi)

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई, और ऊ हो जाते हैं

उदाहरण :

(अ + अ = आ) धर्म + अर्थ =धर्मार्थ ।

(अ + आ = आ) हिम + आलय = हिमालय ।

(आ + अ = आ) विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

(आ + आ = आ) विद्या + आलय = विद्यालय ।

(इ + इ = ई) रवि + इंद्र = रवींद्र, मुनि + इंद्र =मुनींद्र ।

(इ + ई = ई) गिरि + ईश = गिरीश, मुनि + ईश = मुनीश।

(ई + इ = ई) मही + इंद्र = महींद्र, नारी + इंदु = नारींदु ।

(ई + ई = ई) नदी + ईश = नदीश मही + ईश =महीश ।

(उ + उ = ऊ) भानु + उदय = भानूदय, विधु + उदय =विधूदय ।

(उ + ऊ = ऊ) लघु + ऊर्मि = लघूर्मि, सिधु + ऊर्मि =सिंधूर्मि ।

(ऊ + उ = ऊ) वधू + उत्सव = वधूत्सव, वधू + उल्लेख =वधूल्लेख ।

(ऊ + ऊ = ऊ) भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व, वधू + ऊर्जा =वधूर्जा ।

गुण संधि (Gun Sandhi)

इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए, उ, ऊ हो तो ओ, तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं ।

उदाहरण :

(अ + इ = ए) नर + इंद्र = नरेंद्र ।

(अ + ई = ए) नर + ईश = नरेश ।

(आ + इ = ए) महा + इंद्र = महेंद्र ।

(आ + ई = ए) महा + ईश = महेश ।

(अ + ई = ओ) ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश ।

(आ + उ = ओ) महा + उत्सव = महोत्सव ।

(अ + ऊ = ओ) जल + ऊर्मि = जलोर्मि ।

(आ + ऊ = ओ) महा + ऊर्मि = महोर्मि ।

(अ + ऋ = अर्) देव + ऋषि = देवर्षि ।

(आ + ऋ = अर्) महा + ऋषि = महर्षि ।

वृद्धि संधि (Vraddhi Sandhi)

अ आ का ए ऐ से मेल होने पर ऐ अ आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं ।

उदाहरण :

(अ + ए = ऐ) एक + एक = एकैक ।

(अ + ऐ = ऐ) मत + ऐक्य = मतैक्य ।

(आ + ए = ऐ) सदा + एव = सदैव ।

(आ + ऐ = ऐ) महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य ।

(अ + ओ = औ) वन + ओषधि = वनौषधि ।

(आ + ओ = औ) महा + औषधि = महौषधि ।

(अ + औ = औ) परम + औषध = परमौषध ।

(आ + औ = औ) महा + औषध = महौषध ।

यण संधि (Yan Sandhi)

(क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है। (ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है। (ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं ।

उदाहरण :

(इ + अ = य् + अ) यदि + अपि = यद्यपि ।

(ई + आ = य् + आ) इति + आदि = इत्यादि ।

(ई + अ = य् + अ) नदी + अर्पण = नद्यर्पण।

(ई + आ = य् + आ) देवी + आगमन = देव्यागमन।

(उ + अ = व् + अ) अनु + अय = अन्वय ।

(उ + आ = व् + आ) सु + आगत = स्वागत ।

(उ + ए = व् + ए) अनु + एषण = अन्वेषण ।

(ऋ + अ = र् + आ) पितृ + आज्ञा =पित्राज्ञा ।

<u>अयादि संधि</u> (Ayadi Sandhi)

ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं ।

उदाहरण :

(ए + अ = अय् + अ) ने + अन = नयन ।

(ऐ + अ = आय् + अ) गै + अक = गायक ।

(ओ + अ = अव् + अ) पो + अन = पवन ।

(औ + अ = आव् + अ) पौ + अक = पावक ।

(औ + इ = आव् + इ) नौ + इक = नाविक ।

<u>व्यंजन संधि</u> (Vyanjan Sandhi)

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं ।

उदाहरण : शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र ।

(क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी
वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है । जैसे (क् + ग = ग्ग) दिक् + गज = दिग्गज ।

(क् + ई = गी) वाक् + ईश = वागीश ।

(च् + अ = ज्) अच् + अंत = अजंत ।

(ट् + आ = डा) षट् + आनन = षडानन ।

(प + ज + ब्ज) अप् + ज = अब्ज ।

(ख) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके

स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है । जैसे -

(क् + म = ङ्) वाक् + मय = वाङ्मय ।

(च् + न = ञ्) अच् + नाश = अञ्नाश ।

(ट् + म = ण्) षट् + मास = षण्मास ।

(त् + न = न्) उत् + नयन = उन्नयन ।

(प् + म् = म्) अप् + मय = अम्मय ।

(ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है । जैसे -

(त् + भ = द्भ) सत् + भावना = सद्भावना ।

(त् + ई = दी) जगत् + ईश = जगदीश ।

(त् + भ = द्भ) भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति ।

(त् + र = द्र) तत् + रूप = तद्रूप ।

(त् + ध = द्ध) सत् + धर्म = सद्धर्म ।

(घ) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है । जैसे -

(त् + च = च्च) उत् + चारण = उच्चारण ।

(त् + ज = ज्ज) सत् + जन = सज्जन ।

(त् + झ = ज्झ) उत् + झटिका = उज्झटिका ।

(त् + ट = ट्ट) तत् + टीका = तट्टीका ।

(त् + ड = ड्ड) उत् + डयन = उड्डयन ।

(त् + ल = ल्ल) उत् + लास = उल्लास ।

(ड़) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है । जैसे -

(त् + श् = च्छ) उत् + श्वास = उच्छ्वास ।

(त् + श = च्छ) उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट ।

(त् + श = च्छ) सत् + शास्त्र =सच्छास्त्र ।

(च) त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है । जैसे -

(त् + ह = द्ध) उत् + हार = उद्धार ।

(त् + ह = द्ध) उत् + हरण = उद्धरण ।

(त् + ह = द्ध) तत् + हित = तद्धित ।

(छ) स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है । जैसे -

(अ + छ = अच्छ) स्व + छंद = स्वच्छंद ।

(आ + छ = आच्छ) आ + छादन = आच्छादन ।

(इ + छ = इच्छ) संधि + छेद = संधिच्छेद ।

(उ + छ = उच्छ) अनु + छेद = अनुच्छेद ।

(ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है । जैसे -

(म् + च् = ं) किम् + चित = किंचित ।

(म् + क = ं) किम् + कर = किंकर ।

(म् + क = ं) सम् + कल्प = संकल्प ।

(म् + च = ं) सम् + चय = संचय ।

(म् + त = ं) सम् + तोष = संतोष ।

(म् + ब = ं) सम् + बंध = संबंध ।

(म् + प = ं) सम् + पूर्ण = संपूर्ण ।

(झ) म् के बाद म का द्वित्व हो जाता है ।

जैसे - (म् + म = म्म) सम् + मति = सम्मति ।

(म् + म = म्म) सम् + मान = सम्मान ।

(ञ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है । जैसे -

(म् + य = ं) सम् + योग = संयोग ।

(म् + र = ं) सम् + रक्षण = संरक्षण ।

(म् + व = ं) सम् + विधान = संविधान ।

(म् + व = ं) सम् + वाद = संवाद ।

(म् + श = ं) सम् + शय = संशय ।

(म् + ल = ं) सम् + लग्न = संलग्न ।

(म् + स = ं) सम् + सार = संसार ।

(ट) ऋ,र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता । जैसे -

(र् + न = ण) परि + नाम = परिणाम ।

(र् + म = ण) प्र + मान = प्रमाण ।

(ठ) स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है । जैसे -

(भ् + स् = ष) अभि + सेक = अभिषेक ।

नि + सिद्ध = निषिद्ध ।

वि + सम = विषम ।

<u>विसर्ग संधि</u> (Visarg Sandhi) विसर्ग (:) के बाद

स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार (परिवर्तन) होता है उसे विसर्ग-संधि कहते हैं ।

उदाहरण : मनः + अनुकूल = मनोनुकूल ।

(क) विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे-

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल ।

अधः + गति = अधोगति ।

मनः + बल = मनोबल ।

(ख) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे-

निः + आहार = निराहार ।

निः + आशा = निराशा ।

निः + धन = निर्धन ।

(ग) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे-

निः + चल = निश्चल ।

निः + छल = निश्छल ।

दुः + शासन = दुश्शासन ।

(घ)विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। जैसे-

नमः + ते = नमस्ते ।

निः + संतान = निस्संतान ।

दुः + साहस = दुस्साहस ।

(ड़) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। जैसे-

निः + कलंक = निष्कलंक ।

चतुः + पाद = चतुष्पाद ।

निः + फल = निष्फल ।

(ड)विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे-

निः + रोग = निरोग ।

निः + रस = नीरस ।

(छ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे-

अंतः + करण = अंतःकरण

जब किसी शब्द को दो भागों में तोड़ा जाता है और तोड़े हुए दोनों शब्द अपने शब्दों का अलग अलग सही अर्थ देते हैं तब इस प्रक्रिया को **संधि विच्छेद** कहते हैं ।

यहाँ नीचे सूची में कुछ शब्द दिये गए हैं जिन पर क्लिक करके आप संधि विच्छेद के कई उदहारण देख सकते हैं ।

संधि विच्छेद-जब किसी शब्द को दो भागों में तोड़ा जाता है और तोड़े हुए दोनों शब्द अपने शब्दों का अलग अलग सही अर्थ देते हैं तब इस प्रक्रिया को संधि विच्छेद कहते हैं ।

संधि का नाम	संधि विच्छेद	संधि का नियम	संधि का प्रकार
(आच्छादन)	आ + छादन	(आ + छ = आच्छ)	व्यंजन संधि
(अब्धि)	अप् + धि	प वर्ग	व्यंजन संधि
(अभिषेक)	अभि + सेक	(भ् + स् = ष)	व्यंजन संधि

(अभीष्ट)	अभि + इष्ट	इ + इ = ई	दीर्घ संधि
(अभ्यर्थी)	अभि + अर्थी		यण संधि
(अभ्युदय)	अभि + उदय	इ + उ = य + उ	यण संधि
(अभ्युत्थान)	अभि + उत्थान	इ + उ = य + उ	यण संधि
(अब्ज)	अप् + ज	(प + ज + ब्ज)	व्यंजन संधि
(अधःफलित)	अधः + फलित		विसर्ग संधि
(अधीक्षण)	अधि + इक्षण	इ + इ = ई	दीर्घ संधि
(अधोगति)	अधः + गति		विसर्ग संधि
(अधोघात)	अधः + घात		विसर्ग संधि
(अधोजल)	अधः + जल		विसर्ग संधि
(अधःपतन)	अधः + पतन		विसर्ग संधि
(अध्यादेश)	अधि + देश		यण संधि
(अध्याहर)	अधि + आहार		यण संधि
(अध्यक्ष)	अधि + अक्ष		यण संधि
(अध्ययन)	अधि + अयन	इ + अ = य + अ	यण संधि
(अग्नाशय)	अग्नि + आशय	इ + आ = य + आ	यण संधि
(आज्ञानुसार)	आज्ञा + अनुसार	आ + अ = आ	दीर्घ संधि
(अञ्नाश)	अच् + नाश	(च् + न = ञ्)	व्यंजन संधि

(अजादि)	अच् + आदि	च वर्ग	व्यंजन संधि
(अजंत)	अच् + अंत	(च् + अ = ज)	व्यंजन संधि
(आमाशय)	आम + आशय	अ + आ = आ	दीर्घ संधि
(अम्मय)	अप् + मय	(प् + म् = म)	व्यंजन संधि
(अन्नाभाव)	अन्न + आभाव	अ + अ = आ	दीर्घ संधि
(अन्तर्गत)	अन्तः गत		विसर्ग संधि
(अंतःकरण)	अंतः + करण		विसर्ग संधि
(अनुच्छेद)	अनु + छेद	(उ + छ = उच्छ)	व्यंजन संधि
(अनुदित)	अनु + उदित		दीर्घ संधि

Hindi Sentences (हिंदी वाक्य)

हिंदी वाक्य :- वक्ता के कथन को पूर्णत: व्यक्त करने वाले सार्थक शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।

वाक्य में पूर्णता तभी आती है जब पद सुनिश्चित क्रम में हों और इन पदों में पारस्परिक अन्वय (समन्वय) विद्यमान हो। वाक्य की शुद्धता भी पदक्रम एवं अन्वय से सम्बंधित है।

वाक्य के भेद:-

1. **रचना की दृष्टि से**:- रचना की दृष्टि से वाक्य **तीन** प्रकार के होते हैं:
   (अ) सरल वाक्य
   (ब) संयुक्त वाक्य
   (स) मिश्रित वाक्य

(अ) सरल वाक्य:- जिन वाक्यों में एक मुख्य क्रिया हो, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं। जैसे पानी बरस रहा है।

(ब) संयुक्त वाक्य:- जिन वाक्यों में साधारण या मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अव्ययों द्वारा होते है उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं, जैसे राम घर गया और खाना खाकर सो गया।

(स) मिश्रित वाक्य:- इनमें एक प्रधान उपवाक्य होता है और एक आश्रित उपवाक्य होता है जैसे राम ने कहा कि मैं कल नहीं आ सकूंगा।

2. <u>अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद</u>:- ये **आठ** प्रकार के होते हैं: -

(1) **विधानार्थक** :- जिसमें किसी बात के होने का बोध हो। जैसे मोहन घर गया।
(2) **निषेधात्मक** :- जिसमें किसी बात के न होने का बोध हो। जैसे सीता ने गीत नहीं गाया।
(3) **आज्ञावाचक** :- जिसमें आज्ञा दी गई हो। जैसे यहां बैठो।
(4) **प्रश्नवाचक** :- जिसमें कोई प्रश्न किया गया हो। जैसे तुम कहाँ रहते हो?
(5) **विस्मयवाचक** :- जिसमें किसी भाव का बोध हो। जैसे हाय, वह मर गया।
(6) **संदेहवाचक** :- जिसमें संदेह या संभावना व्यक्त की गई हो। जैसे वह आ गया होगा।
(7) **इच्छावाचक** :- जिसमें कोई इच्छा या कामना व्यक्त की जाए। जैसे ईश्वर तुम्हारा भला करे।
(8) **संकेतवाचक** :- जहाँ एक वाक्य दूसरे वाक्य के होने पर निर्भर हो। जैसे यदि गर्मी पड़ती तो पानी बरसता।

Hindi Sounds (हिंदी ध्वनियाँ)

हिंदी की देवनागरी लिपि में कुल **52 वर्ण** हैं। यह वर्णमाला इस प्रकार है:
<u>स्वर</u> :- अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ऋ , ए , ऐ , ओ , औ (कुल = 11)

<u>अनुस्वार</u>:- अं (कुल = 1)

<u>विसर्ग</u>:- अः (:) (कुल = 1)

<u>व्यंजन</u>:-

कंठ्य :- क , ख, ग, घ, ड़ = 5

तालव्य :- च , छ, ज, झ, ञ = 5

मूर्धन्य :- ट , ठ , ड , ढ , ण = 5

दन्त्य :- त , थ , द , ध , न = 5

ओष्ठ्य :- प , फ , ब , भ , म = 5

अन्तस्थ :- य , र , ल , व = 4

ऊष्म :- श , स , ष , ह = 4

संयुक्त व्यंजन: - क्ष , त्र , ज्ञ , श्र = 4

द्विगुण व्यंजन: - ड़ , ढ़ = 2

कुल वर्ण: 52

स्वर ध्वनियों के उच्चारण में किसी अन्य ध्वनि की सहायता नहीं ली जाती। वायु मुख विवर में बिना किसी अवरोध के बाहर निकलती है, किन्तु व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है।

व्यंजन वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में भीतर से आने वाली वायु मुख विवर में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में बाधित होती है।

Indeclinable - अव्यय (अविकारी शब्द) :

जिन शब्दों जैसे क्रियाविशेषण ,संबंधबोधक ,समुच्चयबोधक , तथा विस्मयादिबोधक आदि के स्वरूप में किसी भी कारण से परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं ! अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहा जाता है !

अव्यय - अव्यय वे शब्द हैं जिनमें लिंग ,पुरुष ,काल आदि की दृष्टि से कोई परिवर्तन नहीं होता, जैसे - यहाँ ,कब, और आदि ! अव्यय शब्द **पांच** प्रकार के होते हैं -

1 - क्रियाविशेषण - धीरे -धीरे , बहुत
2 - संबंधबोधक - के साथ , तक
3 - समुच्चयबोधक - तथा , एवं ,और
4 - विस्मयादिबोधक - अरे ,हे
5 - निपात - ही ,भी

1 - **क्रियाविशेषण अव्यय** - जो अव्यय किसी क्रिया की विशेषता बताते हैं ,वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं , जैसे - मैं **बहुत** थक गया हूँ ।

क्रियाविशेषण के **चार** भेद हैं -

1 - **कालवाचक क्रियाविशेषण**- जिन शब्दों से कालसंबंधी क्रिया की विशेषता का बोध हो ,
जैसे - कल ,आज ,परसों ,जब ,तब सायं आदि ! (कृष्ण **कल** जाएगा ।)

2 - **स्थानवाचक क्रियाविशेषण**- जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने या न होने के स्थान का बोध कराएँ ,
जैसे - यहाँ ,इधर ,उधर ,बाहर ,आगे ,पीछे ,आमने ,सामने ,दाएँ ,बाएँ आदि
(**उधर** मत जाओ ।)

3 - **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**- जहाँ क्रिया के परिमाण / मात्रा की विशेषता का बोध हो ,
जैसे - जरा ,थोड़ा , कुछ ,अधिक ,कितना ,केवल आदि ! (**कम** खाओ)

4 - **रीतिवाचक क्रियाविशेषण**- इसमें क्रिया के होने के ढंग का पता चलता है , जैसे - जोर से,
धीरे -धीरे ,भली -भाँति ,ऐसे ,सहसा ,सच ,तेज ,नहीं ,कैसे ,वैसे ,ज्यों ,त्यों आदि !
(वह **पैदल** चलता है ।)

2 - **संबंधबोधक अव्यय** - जो अविकारी शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर दूसरे शब्दों से उनका संबंध बताते हैं ,संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं ,
जैसे - के बाद , से पहले ,के ऊपर ,के कारण ,से लेकर ,तक ,के अनुसार ,के भीतर ,की खातिर ,के लिए, के बिना , आदि ! (विद्या **के बिना** मनुष्य पशु है ।)

3 - **समुच्चयबोधक अव्यय** - दो शब्दों ,वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं !

जैसे - कि ,मानों ,आदि ,और ,अथवा ,यानि ,इसलिए , किन्तु ,तथापि ,क्योंकि ,मगर ,बल्कि आदि ! (मोहन पढ़ता है **और** सोहन लिखता है ।)

4 - **विस्मयादिबोधक अव्यय** - जो अविकारी शब्द हमारे मन के हर्ष ,शोक ,घृणा ,प्रशंसा , विस्मय आदि भावों को व्यक्त करते हैं , उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं ! जैसे -
अरे ,ओह ,हाय ,ओफ ,हे आदि !(इन शब्दों के साथ संबोधन का चिन्ह (**!**) भी लगाया
जाता हैं ! जैसे - **हाय** राम **!** यह क्या हो गया ।)

5 - **निपात** - जो अविकारी शब्द किसी शब्द या पद के बाद जुड़कर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल भर देते हैं उन्हें निपात कहते हैं ! जैसे - ही ,भी ,तो ,तक ,भर ,केवल/ मात्र ,
आदि ! (राम **ही** लिख रहा है ।)

One Word Definitions (वाक्यांश के लिए एक शब्द)

जिसका जन्म नहीं होता - अजन्मा
पुस्तकों की समीक्षा करने वाला - समीक्षक , आलोचक
जिसे गिना न जा सके - अगणित
जो कुछ भी नहीं जानता हो - अज्ञ
जो बहुत थोड़ा जानता हो - अल्पज्ञ
जिसकी आशा न की गई हो - अप्रत्याशित
जो इन्द्रियों से परे हो - अगोचर
जो विधान के विपरीत हो - अवैधानिक
जो संविधान के प्रतिकूल हो - असंवैधानिक
जिसे भले -बुरे का ज्ञान न हो - अविवेकी
जिसके समान कोई दूसरा न हो - अद्‌वितीय
जिसे वाणी व्यक्त न कर सके - अनिर्वचनीय
जैसा पहले कभी न हुआ हो - अभूतपूर्व
जो व्यर्थ का व्यय करता हो - अपव्ययी
बहुत कम खर्च करने वाला - मितव्ययी
सरकारी गजट में छपी सूचना - अधिसूचना
जिसके पास कुछ भी न हो - अकिंचन
दोपहर के बाद का समय - अपराह्न
जिसका निवारण न हो सके - अनिवार्य
देहरी पर रंगों से बनाई गई चित्रकारी - अल्पना
आदि से अन्त तक - आघन्त
जिसका परिहार करना सम्भव न हो - अपरिहार्य
जो ग्रहण करने योग्य न हो - अग्राह्य
जिसे प्राप्त न किया जा सके - अप्राप्य
जिसका उपचार सम्भव न हो - असाध्य
भगवान में विश्वास रखने वाला - आस्तिक
भगवान में विश्वास न रखने वाला- नास्तिक
आशा से अधिक - आशातीत
ऋषि की कही गई बात - आर्ष
पैर से मस्तक तक - आपादमस्तक
अत्यंत लगन एवं परिश्रम वाला - अध्यवसायी
आतंक फैलाने वाला - आंतकवादी

देश के बाहर से कोई वस्तु मंगाना - आयात
जो तुरंत कविता बना सके - आशुकवि
नीले रंग का फूल - इन्दीवर
उत्तर -पूर्व का कोण - ईशान
जिसके हाथ में चक्र हो - चक्रपाणि
जिसके मस्तक पर चन्द्रमा हो - चन्द्रमौलि
जो दूसरों के दोष खोजे - छिद्रान्वेषी
जानने की इच्छा - जिज्ञासा
जानने को इच्छुक - जिज्ञासु
जीवित रहने की इच्छा- जिजीविषा
इन्द्रियों को जीतने वाला - जितेन्द्रिय
जीतने की इच्छा वाला - जिगीषु
जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं - टकसाल
जो त्यागने योग्य हो - त्याज्य
जिसे पार करना कठिन हो - दुस्तर
जंगल की आग - दावाग्नि
गोद लिया हुआ पुत्र - दत्तक
बिना पलक झपकाए हुए - निर्निमेष
जिसमें कोई विवाद ही न हो - निर्विवाद
जो निन्दा के योग्य हो - निन्दनीय
मांस रहित भोजन - निरामिष
रात्रि में विचरण करने वाला - निशाचर
किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता - पारंगत
पृथ्वी से सम्बन्धित - पार्थिव
रात्रि का प्रथम प्रहर - प्रदोष
जिसे तुरंत उचित उत्तर सूझ जाए - प्रत्युत्पन्नमति
मोक्ष का इच्छुक - मुमुक्षु
मृत्यु का इच्छुक - मुमूर्षु
युद्ध की इच्छा रखने वाला - युयुत्सु
जो विधि के अनुकूल है - वैध
जो बहुत बोलता हो - वाचाल
शरण पाने का इच्छुक - शरणार्थी
सौ वर्ष का समय - शताब्दी
शिव का उपासक - शैव
देवी का उपासक - शाक्त

समान रूप से ठंडा और गर्म - समशीतोष्ण
जो सदा से चला आ रहा हो - सनातन
समान दृष्टि से देखने वाला - समदर्शी
जो क्षण भर में नष्ट हो जाए - क्षणभंगुर
फूलों का गुच्छा - स्तवक
संगीत जानने वाला - संगीतज्ञ
जिसने मुकदमा दायर किया है - वादी
जिसके विरुद्ध मुकदमा दायर किया है - प्रतिवादी
मधुर बोलने वाला - मधुरभाषी
धरती और आकाश के बीच का स्थान - अन्तरिक्ष
हाथी के महावत के हाथ का लोहे का हुक - अंकुश
जो बुलाया न गया हो - अनाहूत
सीमा का अनुचित उल्लंघन - अतिक्रमण
जिस नायिका का पति परदेश चला गया हो - प्रोषित पतिका
जिसका पति परदेश से वापस आ गया हो - आगत पतिका
जिसका पति परदेश जाने वाला हो - प्रवत्स्यत्पतिका
जिसका मन दूसरी ओर हो - अन्यमनस्क
संध्या और रात्रि के बीचकी वेला - गोधुलि
माया करने वाला - मायावी
किसी टूटी - फूटी इमारत का अंश - भग्नावशेष
दोपहर से पहले का समय - पूर्वाह्न
कनक जैसी आभा वाला - कनकाय
हृदय को विदीर्ण कर देने वाला - हृदय विदारक
हाथ से कार्य करने का कौशल - हस्तलाघव
अपने आप उत्पन्न होने वाला - स्त्रैण
जो लौटकर आया है - प्रत्यागत
जो कार्य कठिनता से हो सके - दुष्कर
जो देखा न जा सके - अलक्ष्य
बाएँ हाथ से तीर चला सकने वाला - सव्यसाची
वह स्त्री जिसे सूर्य ने भी न देखा हो - असुर्यम्पश्या
यज्ञ में आहुति देने वाला - हौदा
जिसे नापना सम्भव न हो - असाध्य
जिसने किसी दूसरे का स्थान अस्थाई रूप से ग्रहण किया हो - स्थानापन्
जो दिखाई न दे - अदृश्य
जिसका जन्म न हो - अजन्मा

जिसका कोई शत्रु न हो - अजातशत्रु
जो बूढ़ा न हो - अजर
जो कभी न मरे - अमर
जो पढ़ा -लिखा न हो - अपढ़ ,अनपढ़
जिसके कोई संतान न हो - निसंतान
जो उदार न हो - अनुदार
जिसमे धैर्य न हो - अधीर
जिसमे सहन शक्ति हो - सहिष्णु
जिसके समान दूसरा न हो - अनुपम
जिस पर विश्वास न किया जा सके - अविश्वनीय
जिसकी थाह न हो - अथाह
दूर की सोचने वाला - दूरदर्शी
जो दूसरों पर अत्याचार करें - अत्याचारी
जिसके पास कुछ भी न हो - अकिंचन
दुसरे देश से अपने देश में समान आना - आयात
अपने देश से दुसरे देश में समान जाना - निर्यात
जो कभी नष्ट न हो - अनश्वर
जिसे कोई जीत न सके - अजेय
अपनी हत्या स्वयं करना - आत्महत्या
जिसे दंड का भय न हो - उदंड
जिस भूमि पर कुछ न उग सके - ऊसर
जनता में प्रचलित सुनी -सुनाई बात - किंवदंती
जो उच्च कुल में उत्पन्न हुआ हो - कुलीन
जिसकी सब जगह बदनामी -कुख्यात
जो क्षमा के योग्य हो - क्षम्य
शीघ्र नष्ट होने वाला - क्षणभंगुर
कुछ दिनों तक बने रहना वाला - टिकाऊ
पति-पत्नी का जोड़ा - दम्पति
जो कम बोलता हो -मितभाषी
जो अधिक बोलता हो - वाचाल
जिसका पति जीवित हो - सधवा
जिसमे रस हो - सरस
जिसमे रस न हो - नीरस
भलाई चाहने वाला - हितैषी
दूसरों की बातों में दखल देना - हस्तक्षेप

दिल से होने वाला - हार्दिक
जिसमे दया न हो - निर्दय
जो सब जगह व्याप्त हो -सर्वव्यापक
जानने की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु
सप्ताह में एक बार होने वाला - साप्ताहिक
साहित्य से सम्बन्ध रखने वाला - साहित्यिक
मांस खाने वाला - मांसाहारी
जिसके आने की तिथि न हो - अतिथि
जिसके ह्रदय में दया हो - दयावान
जो चित्र बनाता हो - चित्रकार
विद्या की चाह रखने वाला - विद्यार्थी
हमेशा सत्य बोलने वाला - सत्यवादी
जो देखने योग्य हो - दर्शनीय
जो धन का दुरुपयोग करता है - अपव्ययी
जहाँ पहुँचा न जा सके - अगम्य
जिसे जीता न जा सके - अजेय
जिसका अंत न हो - अनन्त
जिसका जन्म न हो सके - अजन्मा .
अवसर के अनुसार बदल जाने वाला - अवसरवादी
जो कानून के विरुद्ध हो - अवैध
दूसरे के पीछे चलने वाला - अनुचर
जिसका कोई स्वामी न हो - अनाथ
जिसे क्षमा न किया जा सके - अक्षम्य .
जिसका इलाज न हो सके - असाध्य
जिसका विश्वास न किया जा सके - अविश्वसनीय
जिस पर अभियोग लगाया गया हो - अभियुक्त
जिसमे शक्ति न हो - अशक्त
जो पहले न पढ़ा हो - अपठित
जिसकी कोई उपमा न हो - अनुपम .
कम जानने वाला - अल्पज्ञ .
जो कुछ न करता हो - अकर्मण्य
जो दिखाई न दे - अदृश्य
जिसका मूल्य न आँका जा सके - अमूल्य
जो नष्ट न होने वाला हो - अविनाशी .
जो आँखों के सामने न हो - अप्रत्यक्ष

जिसका पार न पाया जाए - अपार .
जो परिचित न हो - अपरिचित
जहाँ जाना संभव न हो - अगम .
चार मुखों वाला - चतुरानन
दूसरों के दोष को खोजने वाला - छिद्रान्वेसी
छात्रों के रहने का स्थान - छात्रवास
जनता द्वारा चलाया जाने वाला राज - जनतंत्र .
जल में रहने वाला - जलचर .
जो जन्म से अँधा हो - जन्मांध .
जीने की इच्छा - जिजीविषा .
वह पहाड़ जिससे आग निकलती हो - ज्वालामुखी .
जो किसी का पक्ष न ले - तटस्थ
जिसकी तीन भुजाएँ हो - त्रिभुज .
तीनों लोकों का स्वामी - त्रिलोकी .
जो पुत्र गोद लिया हो - दत्तक .
बुरे आचरण वाला - दुराचारी .
जो दो भाषाएँ जानता हो - दुभाषिया .
जिसकी आयु बड़ी लम्बी हो - दीर्घायु
प्रतिदिन होने वाला - प्रतिदिन .
बुरे चरित्र वाला - दुश्चरित्र .
जिसमे दया हो - दयालु .
जो कठिनाई से प्राप्त हो - दुर्लभ .
जहाँ पहुँचना कठिन हो - दुर्गम .
दर्द से भरा हुआ - दर्दनाक .
जो धर्म का काम करे - धर्मात्मा .
जिसका कोई अर्थ न हो - निरर्थक .
जिसके मन में कोई कपट न हो - निष्कपट .
जो अभी - अभी पैदा हुआ हो - नवजात .
जो पहले कभी न हुवा हो - अनहुवा
पर्वत को उठाने वाला - गिरधर
जिसे करना कठिन हो -असाध्य
नाक से सुपारी तोड़ना - असंभव कार्य (कदाचित)
पशुओं को चराने वाला -चरवाहा
ओ बार जन्म लने वाला - द्विजन्यु

बहुत सी भाषा जानने वाला- बहु भाषाज्ञ या भाषक
नमक रखने का पात्र -रामरस(लवण) धानी
मसाला दानी-चूर्ण(धनिया,तीक्ष्ण रस या मिर्च, लवंग या तीक्ष्ण पुष्प,आदि का मिश्रण) धानी
बहुंत अधिक खाने वाला - भूख्खड़
पुलिस के अपराध अकित करे की पुस्तिका - केस डायरी या प्रकरण दैन्यदिनी (कदाचित)
जिसकी पत्नी जीवित हो - विवाहित अथवा सहजानि अथवा सहदारअथवा सहभार्य
जिसकी पत्नी मर गई हो -विधुर कहते हैं

Pronunciation Errors (उच्चारणगत अशुद्धियाँ)

बोलने और लिखने में होने वाली अशुद्धियाँ प्राय: दो प्रकार की होती हैं
व्याकरण सम्बन्धी तथा उच्चारण सम्बन्धी , यहाँ हम उच्चारण एवं वर्तनी सम्बन्धी महत्वपूर्ण त्रुटियों की ओर संकेत करंगे , ये अशुद्धियाँ स्वर एवं व्यंजन और विसर्ग तीनों वर्गों से सम्बन्धित होती हैं , व्यंजन सम्बन्धी त्रुटियाँ वर्तनी के अन्तर्गत आ गई हैं , नीचे स्वर एवं विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियों की और इंगित किया गया है !

अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप -

1 . - **स्वर या मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ** -

1 - **अ ,आ** सम्बन्धी भूलें -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- अहार	आहार
- अजमायश	आजमाइश

2 - **इ , ई** सम्बन्धी भलें = **इ** की मात्रा होनी चाहिए , **ई** की नहीं -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- कोटी	कोटि
- कालीदास	कालिदास

= **इ** की मात्रा छूट गई है , होनी चाहिए -

अशुद्ध रूप शुद्ध रूप

- वाहनी वाहिनी
- नीत नीति

= **इ** की मात्रा नहीं होनी चाहिए -

अशुद्ध रूप शुद्ध रूप

- वापिस वापस
- अहिल्या अहल्या

= **ई** की मात्रा होनी चाहिए , **इ** की नहीं -

अशुद्ध रूप शुद्ध रूप

- निरोग नीरोग
- दिवाली दीवाली

3 - **उ ,ऊ** सम्बन्धी भूलें -

अशुद्ध रूप शुद्ध रूप

- तुफान तूफान
- वधु वधू

4 - **ऋ** सम्बन्धी भलें -

अशुद्ध रूप शुद्ध रूप

- उरिण उऋण
- आदरित आदृत

5 - **ए ,ऐ ,अय** सम्बन्धी भलें -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- नैन	नयन
- सैना	सेना
- चाहिये	चाहिए

6 - **ई** और **यी** सम्बन्धी भलें -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- नई	नयी
- स्थाई	स्थायी

7 - **ओ , और ,अव ,आव** सम्बन्धी भूलें -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- चुनाउ	चुनाव
- होले	हौले

8 - **अनुस्वार** और **अनुनासिक** सम्बन्धी भूलें-

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- गंवार	गँवार
- अंधेरा	अँधेरा

9 - पंचम वर्ण का प्रयोग - **ञ् , ण ,न , म , ङ्** को पंचमाक्षर कहते हैं ,ये अपने वर्ग के व्यंजन के साथ प्रयुक्त होते हैं -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- कन्धा	कंधा
- सम्वाद	संवाद

10 - **विसर्ग** सम्बन्धी भूलें -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- दुख	दुःख
- अंताकरण	अंत:करण

- सन्धि करने में भूलें - (**स्वर सन्धि**)-

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- अत्याधिक	अत्यधिक
- अनाधिकार	अनधिकार
- सदोपदेश	सदुपदेश

- **व्यंजन** सन्धि में भूलें -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- महत्व	महत्त्व
- उज्वल	उज्ज्वल
- सम्हार	संहार

- **विसर्ग** सन्धि में भूलें -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
- अतेव	अतएव
- दुस्कर	दुष्कर
- यशगान	यशोगान

- **समास** सम्बन्धी भूलें -

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप

- उस्मा ऊष्मा
- ऊषा उषा
- अध्यन अध्ययन

Paksh - पक्ष :

क्रिया के जिस रूप से क्रिया प्रक्रिया अर्थात क्रिया व्यापार का बोध होता है ,उसे क्रिया का पक्ष कहते हैं ! यह क्रिया- व्यापार दो दृष्टियों से देखा जा सकता है ! पहली दृष्टि से हम देखते हैं कि क्रिया की प्रक्रिया आरंभ होने वाली है अथवा आरंभ हो चुकी है ,अथवा वर्तमान में चालू है या हो चुकी है ! दूसरी दृष्टि में क्रिया -प्रक्रिया को एक इकाई के रूप में देखते हैं ! दोनों दृष्टियों के प्रमुख पक्ष उदाहरण सहित इस प्रकार हैं -

1 . (क) आरंभदयोतक पक्ष -इस पक्ष में क्रिया के आरंभ होने की स्थिति का बोध होता है ,
जैसे - अब मोहन खेलने लगा है !

(ख) सातप्यबोधक पक्ष - इससे क्रिया की प्रक्रिया के चालू रहने का बोध होता है ,जैसे -
गीता कितना अच्छा गा रही है !

(ग) प्रगतिदयोतक पक्ष - इससे क्रिया की निरंतर प्रगति का बोध होता है ,जैसे -
भीड़ बढ़ती जा रही है !

(घ) पूर्णतादयोतक पक्ष - इस पक्ष से क्रिया के पूरी तरह समाप्त हो जाने का बोध होता है,
जैसे - वह अब तक काफी खेल चूका है !

2. (क) नित्यतादयोतक पक्ष - इस पक्ष से क्रिया के नित्य अर्थात सदा बने रहने का बोध होता है , इसका आदि -अंत नहीं होता , जैसे - पृथ्वी गोल है !, सूरज पूर्व में निकलता है !

(ख) अभ्यासदयोतक पक्ष - यह पक्ष क्रिया के स्वभाववश होने का सूचक है , जैसे -
वह दिन भर मेहनत करता था तब सफल हुआ !

Vachan (Singular-Plural) (वचन)

संज्ञा अथवा अन्य विकारी शब्दों के जिस रूप में संख्या का बोध हो , उसे वचन कहते हैं ! वचन के **दो** भेद होते हैं -

1- **<u>एकवचन</u>** :- संज्ञा के जिस रूप से एक ही वस्तु , पदार्थ या प्राणी का बोध होता है , उसे एकवचन कहते हैं !

जैसे - लड़की , बेटी , घोड़ा , नदी आदि !

2- **<u>बहुवचन</u>** :- संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं , पदार्थों या प्राणियों का बोध होता है , उसे बहुवचन कहते हैं !

जैसे - लड़कियाँ , बेटियाँ , घोड़े , नदियाँ आदि !

- एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम इस प्रकार हैं -

1- **अ** को **एं** कर देने से = रात = रातें

2- अनुस्वारी (**.**) लगाने से = डिबिया = डिबियां

3- **यां** जोड़ देने से = रीति = रीतियां

4- **एं** लगाने से = माला = मालाएं

5- **आ** को **ए** कर देने से = बेटा = बेटे

Words with Various Meanings (अनेकार्थी शब्द)

अरुण - लाल ,सूर्य का सारथि ,सूर्य

अज - दशरथ के पिता ,बकरा ,ब्रह्मा

अर्णव - समुंद्र ,सूर्य ,इंद्र

आम - आम का फल ,सर्वसाधारण

इंद्र - राजा ,देवताओं का राजा

इंदु - चन्द्रमा ,कपूर

उमा - पार्वती ,दुर्गा ,हल्दी

उत्तर - जवाब ,एक दिशा

काल - समय ,मृत्यु ,यमराज

कोटि - करोड़ श्रेणी ,धनुष का सिरा

कपि - बंदर ,हाथी ,सूर्य

केतु - पताका ,एक अशुभ ग्रह

कुल - वंश ,सम्पूर्ण

खर - दुष्ट ,गधा ,तिनका

ख - आकाश ,सूर्य ,स्वर्ण

खत - पत्र ,लिखावट

गति - चाल ,हालत ,मोक्ष

घन - घना ,बादल

घट - घड़ा ,शरीर ,हृदय

चश्मा - ऐनक ,झरना

चूना - टपकना ,पुताई करने वाला चूना

छत्र - छाता ,कुकुरमुत्ता ,छतरी

पास - उत्तीर्ण ,निकट

बाग - उपवन ,लगाम

लाल - माणिक्य ,पुत्र ,रक्तवर्णी

वर - श्रेष्ट ,दूल्हा ,वरदान

रस - काव्यानंद ,भोज्यरस ,स्वाद

मित्र - सूर्य ,दोस्त

मंगल - कल्याण ,एक ग्रह

वंश - बाँस ,कुल

जरा - बुढ़ापा ,थोड़ा -सा ,जला हुआ

तरणि - सूर्य ,नौका

दक्ष - चतुर ,ब्रह्मा के पुत्र

धनंजय - अर्जुन, अग्नि

पति - स्वामी, शौहर

पोत - जहाज , मोती , बच्चा

पत्र - चिट्ठी , पत्ता

पद - पैर , पोस्ट , छंद

परदा - आवरण , पट, घूंघट

परी - अप्सरा ,लेटी ,घी मापने का पात्र

नाना - माता का पिता ,विविध

मुद्रा - अंगूठी ,सिक्का ,भावमुद्रा

भूत - भूत प्रेत ,भूतकाल

स्नेह - प्रेम ,तेल

हस्ती - हाथी ,हैसियत

सैंधव - घोड़ा ,नमक

श्री - शोभा ,लक्ष्मी ,सम्पत्ति

श्याम - कृष्ण ,काला

रंभा - एक अप्सरा ,केला ,वेश्या

रसा - पृथ्वी ,जीभ ,शोरबा

लय - लीन होना ,ताल ,प्रवाह

Others Examples:

शब्द	Shabd	अर्थ
काम	Kaam	कार्य, पेशा, धंधा, वासना, कामदेव।
अर्थ	Arth	धन, ऐश्वर्य, प्रयोजन, हेतु।
अक्षर	Akshar	नष्ट न होने वाला, वर्ण, ईश्वर, शिव।
काल	Kaal	समय, मृत्यु, यमराज।
घन	Ghan	बादल, भारी, हथौड़ा, घना।
दल	Dal	समूह, सेना, पत्ता, हिस्सा, पक्ष, भाग, चिड़ी।
लक्ष्य	Lakshy	निशान, उद्देश्य।
नग	Nag	पर्वत, वृक्ष, नगीना।
बाल	Baal	बालक, केश, बाला, दानेयुक्त डंठल।
आराम	Araam	बाग, विश्राम, रोग का दूर होना।
कर	Kar	हाथ, किरण, टैक्स, हाथी की सूँड़।
गुण	Gun	कौशल, शील, रस्सी, स्वभाव, धनुष की डोरी।

जलज	Jalaj	कमल, मोती, मछली, चंद्रमा, शंख।
तात	Taat	पिता, भाई, बड़ा, पूज्य, प्यारा, मित्र।
पयोधर	Pyodhar	बादल, स्तन, पर्वत, गन्ना।
फल	Fal	लाभ, मेवा, नतीजा, भाले की नोक।
मधु	Madhu	शहद, मदिरा, चैत मास, एक दैत्य, वसंत।
राग	Raag	प्रेम, लाल रंग, संगीत की ध्वनि।
वर्ण	Varn	अक्षर, रंग, ब्राह्मण आदि जातियाँ।
क्षेत्र	Kshetra	देह, खेत, तीर्थ, सदाव्रत बाँटने का स्थान।
सर	Sar	अमृत, दूध, पानी, गंगा, मधु, पृथ्वी, तालाब।
राशि	Rashi	समूह, मेष, कर्क, वृश्चिक आदि राशियाँ।
शिव	Shiv	भाग्यशाली, महादेव, श्रृगाल, देव, मंगल।
हरि	Hari	हाथी, विष्णु, इंद्र, पहाड़, सिंह, घोड़ा, सर्प, वानर, मेढक, यमराज, ब्रह्मा, शिव, कोयल, किरण, हंस।
सारंग	Sarang	मोर, सर्प, मेघ, हिरन, पपीहा, राजहंस, हाथी, कोयल, कामदेव, सिंह, धनुष भौंरा, मधुमक्खी, कमल।

Words with Different Meanings and Same Pronunciation (श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द)

ये शब्द चार शब्दों से मिलकर बना है ,श्रुति+सम +भिन्न +अर्थ , इसका अर्थ है . सुनने में समान लगने वाले किन्तु भिन्न अर्थ वाले दो शब्द अर्थात वे शब्द जो सुनने और उच्चारण करने में समान प्रतीत हों, किन्तु उनके अर्थ भिन्न -भिन्न हों , वे श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं .

ऐसे शब्द सुनने या उच्चारण करने में समान भले प्रतीत हों ,किन्तु समान होते नहीं हैं , इसलिए उनके अर्थ में भी परस्पर भिन्नता होती है ; जैसे - अवलम्ब और अविलम्ब . दोनों शब्द सुनने में समान लग रहे हैं , किन्तु वास्तव में समान हैं नहीं ,अत: दोनों शब्दों के अर्थ भी पर्याप्त भिन्न हैं , 'अवलम्ब ' का अर्थ है - सहारा , जबकि अविलम्ब का अर्थ है - बिना विलम्ब के अर्थात शीघ्र .

ये शब्द निम्न इस प्रकार से है -

अंस - अंश = कंधा - हिस्सा

अंत - अत्य = समाप्त - नीच

अन्न -अन्य = अनाज -दूसरा

अभिराम -अविराम = सुंदर -लगातार

अम्बुज - अम्बुधि = कमल -सागर

अनिल - अनल = हवा -आग

अश्व - अश्म = घोड़ा -पत्थर

अनिष्ट - अनिष्ठ = हानि - श्रद्धाहीन

अचर - अनुचर = न चलने वाला - नौकर

अमित - अमीत = बहुत - शत्रु

अभय - उभय = निर्भय - दोनों

अस्त - अस्त्र = आँसू - हथियार

असित - अशित = काला - भोथरा

अर्घ - अर्घ्य = मूल्य - पूजा सामग्री

अली - अलि = सखी - भौंरा

अवधि - अवधी = समय - अवध की भाषा

आरति - आरती = दुःख - धूप-दीप

आहूत - आहुति = निमंत्रित - होम

आसन - आसन्न = बैठने की वस्तु - निकट

आवास - आभास = मकान - झलक

आभरण - आमरण = आभूषण - मरण तक

आर्त्त - आर्द्र = दुखी - गीला

ऋत - ऋतु = सत्य - मौसम

कुल - कूल = वंश - किनारा

कंगाल - कंकाल = दरिद्र - हड्डी का ढाँचा

कृति - कृती = रचना - निपुण

कान्ति - क्रान्ति = चमक - उलटफेर

कलि - कली = कलयुग - अधखिला फूल

कपिश - कपीश = मटमैला - वानरों का राजा

कुच - कूच = स्तन - प्रस्थान

कटिबन्ध - कटिबद्ध = कमरबन्ध - तैयार / तत्पर

छात्र - क्षात्र = विधार्थी - क्षत्रिय

गण - गण्य = समूह - गिनने योग्य

चषक - चसक = प्याला - लत

चक्रवाक - चक्रवात = चकवा पक्षी - तूफान

जलद - जलज = बादल - कमल

तरणी - तरुणी = नाव - युवती

तनु - तनू = दुबला - पुत्र

दारु - दारू = लकड़ी - शराब

दीप - द्वीप = दिया - टापू

दिवा - दीवा = दिन - दीपक

देव - दैव = देवता - भाग्य

नत - नित = झुका हुआ - प्रतिदिन

नीर - नीड़ = जल - घोंसला

नियत - निर्यात = निश्चित - भाग्य

नगर - नागर = शहर - शहरी

निशित - निशीथ = तीक्ष्ण - आधी रात

नमित - निमित = झुका हुआ - हेतु

नीरद - नीरज = बादल - कमल

नारी - नाड़ी = स्त्री - नब्ज

निसान - निशान = झंडा - चिन्ह

निशाकर - निशाचर = चन्द्रमा - राक्षस

पुरुष - परुष = आदमी - कठोर

प्रसाद - प्रासाद = कृपा - महल

पर्यायवाची (Synonyms)

जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है ,उन्हें समानार्थक या पर्यायवाची शब्द कहते है। हिन्दी भाषा में एक शब्द के समान अर्थ वाले कई शब्द हमें मिल जाते है,
जैसे-पहाड़ - पर्वत , अचल, भूधर ।

ये शब्द पर्यायवाची कहलाते है। इन शब्दों के अर्थ में समानता होती है,लेकिन प्रत्येक शब्द की अपनी विशेषता होती है। पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते हुए विशेष सावधानी बरतनी चाहिए । कुछ पर्यायवाची शब्द यहाँ दिए जा रहे है

अंधकार - तिमिर ,अँधेरा ,तम।
आग- अग्नि,अनल,पावक ,दहन,ज्वलन,धूमकेतु,कृशानु ।
अच्छा - उचित ,शोभन ,उपयुक्त ,शुभ ,सौम्य।
अजेय - अजित ,अपराजित ,अपराजेय।
अतिथि - पाहून,आंगतुक ,अभ्यागत ,मेहमान। अनुचर - नौकर ,दास ,सेवक ,परिचारक।
अनुपम - अनूठा ,अनोखा ,अपूर्व ,निराला ,अभूतपूर्व।
अन्य - पृथक ,और ,भिन्न ,दूसरा।
अनाज - शस्य ,अन्न ,धान्य।
अरण्य - विपिन ,वन ,कानन ,कान्तार ,जंगल।
आभूषण - विभूषण ,भूषण ,गहना ,अलंकार।
आज्ञा - हुक्म ,आदेश ,
निर्देश। अमृत-सुधा,अमिय,पियूष,सोम,मधु,अमी।
असुर-दैत्य,दानव,राक्षस,निशाचर,रजनीचर,दनुज।
अश्व - वाजि,घोडा,घोटक,रविपुत्र ,हय,तुरंग .
आम-रसाल,आम्र,सौरभ,मादक,अमृतफल,सहुकार ।
अंहकार - गर्व,अभिमान,दर्प,मद,घमंड।
आँख - लोचन, नयन, नेत्र, चक्षु, दृग, विलोचन, दृष्टि।
आकाश - नभ,गगन,अम्बर,व्योम, अनन्त ,आसमान।
आनंद - हर्ष,सुख,आमोद,मोद,प्रमोद,उल्लास।
आश्रम - कुटी ,विहार,मठ,संघ,अखाडा।
आंसू - नेत्रजल,नयनजल,चक्षुजल,अश्रु ।
इंद्र - देवराज,सुरेन्द्र ,सुरपति ,अमरेश ,देवेन्द्र ,वासव ,सुरराज ,सुरेश .
इन्द्राणी- इंद्रवधु,शची,पुलोमजा .
ईश्वर- भगवान,परमेश्वर,जगदीश्वर ,विधाता।
इच्छा - अभिलाषा,चाह,कामना,लालसा,मनोरथ,आकांक्षा ।

उन्नति - प्रगति ,विकास ,उत्कर्ष ,अभ्युदय ,उत्थान वृद्धि।
उत्साह - आवेग ,जोश ,उमंग।
उद्यान - बाग़ ,कुसुमाकर ,वाटिका ,उपवन ,बगीचा।
औंठ -ओष्ठ,अधर,होठ।
कमल-पद्म,पंकज,नीरज,सरोज,जलज,जलजात ।
कल - सुन्दर ,अगला दिन ,मशीन ,आराम ,श्रेष्ठ।
कपड़ा - चीर ,पट ,वसन ,अम्बर ,वस्त्र।
कनक - गेंहू का आटा ,स्वर्ण ,धतूरा ,सोना।
कृषक - हलवाहा ,किसान ,कृषिजीवी ,खेतिहर।
कान - श्रवण ,श्रुतिपट ,कर्ण ,श्रवानेंद्रिय।
कोमल - नाजुक ,नरम ,मृदु ,सुकुमार ,मुलायम।
कोष - भंडार ,ख़जाना ,निधि।
कोयल - वनप्रिय ,पिक ,कोकिला ,काक्पाली ,वसंतदूत।
किरण - मरीचि ,कर ,अंशु ,रश्मि ,मयूख।
किनारा - कगार ,कूल ,तट ,तीर।
कृपा - प्रसाद,करुणा,दया,अनुग्रह।
खल - अधम , दुर्जन , दुष्ट , कुटिल , नीच।
गाय- गौ,धेनु,सुरभि,भद्रा ,रोहिणी।
गधा - गर्दभ ,खर,धूसर ,शीतलावाहन,चक्रीवान.
चरण -पद,पग,पाँव, पैर ।
चातक - सारन,मेघजीवन ,पपीहा ,स्वातीभक्त .
किताब -पोथी ,ग्रन्थ ,पुस्तक ।
कपड़ा -चीर,वसन, पट ,वस्त्र ,अम्बर ,परिधान ।
कामदेव - मन्मथ ,मनोज,काम,मार ,कंदर्प,अनंग ,मनसिज ,रतिनाथ ,मीनकेतू.
कुबेर - किन्नरपति , किन्नरनरेश ,यक्षराज ,धनाधिप ,धनराज ,धनेश .
किरण -ज्योति, प्रभा,रश्मि, दीप्ति, मरीचि ।
किसान- कृषक,भूमिपुत्र,हलधर,खेतिहर,अन्नदाता ।
कृष्ण - राधापति ,घनश्याम ,वासुदेव , माधव, मोहन ,केशव ,गोविन्द ,गिरधारी ।
कान - कर्ण ,श्रुति ,श्रुतिपटल ।
कल्पवृक्ष- कल्पतरु ,देवतरु,कल्पलता ,देववृक्ष ,पारिजात .
गंगा - देवनदी ,मंदाकनी,भगीरथी ,विश्नुपगा, देवपगा ,ध्रुवनंदा ।
गणेश - गजानन , गौरीनंदन , गणपति , गणनायक , शंकरसुवन ,लम्बोदर ,महाकाय।
कोयल - कोकिला , पिक , काकपाली, बसंतदूत ।
क्रोध - रोष , कोप , अमर्ष , कोह , प्रतिघात ।
गज - हाथी , हस्ती , मतंग , कूम्भा, मदकल ।

गुरु - शिक्षक ,बड़ा ,भारी ,वृहस्पति . ग्रीष्म - ताप ,घाम ,निदाघ ,गर्मी .
गृह - घर , सदन , गेह ,भवन, धाम , निकेतन ,निवास ।
चंद्रमा- चन्द्र ,शशि ,हिमकर ,राकेश ,रजनीश ,निशानाथ ,सोम ,मयंक ,सारंग ,सुधाकर ,कलानिधि ।
चतुर - चालाक ,कुशल ,पटु ,नागर ,दक्ष ,प्रवीण .
जल - वारि , नीर , तीय ,अम्बु , उदक , पानी ,जीवन , पय, पेय ।
जहाज - पोत ,जलयान .
जंगल - विपिन , कानन , वन, अरण्य, गहन ।
जमुना -सूर्यसुता ,कृष्णा, अर्कजा ,रवितनया ,कालिंदी .
जीभ - रसना ,वाणी ,गिरा ,रसज्ञा.
झंडा - फरहरा ,ध्वज ,पताका ,निशान .
झरना - प्रताप ,उत्स ,निर्झर ,सोता ,श्रोत .
झूठ - असत्य , मिथ्या, मृषा, अनृत ।
तन - काया ,तनु ,शरीर ,देह ,कलेवर .
तरु - विटप, पादप , पेड़ ,द्रुम, वृक्ष .
तात - परम , प्यारा , पूज्य , पिता .
तालाब - सरोवर , जलाशय , सर, पुष्कर , पोखरा, जलवान , सरसी ।
तलवार - असि,करवाल ,कृपाण,खडग ,शायक,चंद्रहास .
तीर - वाण,सर ,नाराच ,विहंग शिलिमुख .
तोता - सुग्गा ,शुक ,सुआ,कीर ,दाड़िमप्रिय .
दास- सेवक , नौकर , चाकर , परिचारक , अनुचर ।
दरिद्र - निर्धन , गरीब , रंक , कंगाल , दीन।
दिन - दिवस, याम , दिवा, वार, प्रमान।
दुःख - पीड़ा ,कष्ट , व्यथा , वेदना , संताप , शोक , खेद , पीर, लेश ।
दूध - दुग्ध , क्षीर , पय ।
दुष्ट- पापी , नीच , दुर्जन , अधम , खल , पामर ।
दर्पण - शीशा , आरसी , आईना , मुकुर ।
दांत - दन्त ,दसन ,रद .
दुर्गा - चंडिका , भवानी , कुमारी , कल्याणी , महागौरी , कालिका , शिवा ।
देवता - सुर, देव, अमर , वसु , आदित्य , लेख ।
धनुष - धनुही ,धनु ,सारंग ,चाप ,शरासन .
धन - दौलत , संपत्ति , सम्पदा, वित्त ।
धरती - पृथ्वी , भू, भूमि , धरणी, वसुंधरा , अचला , मही, रत्नवती , रत्नगर्भा ।
ध्वनि - स्वर ,आवाज ,आहट .
नदी - सरिता , तटीना , सरि, सारंग , जयमाला ।

नया - नूतन , नव, नवीन , नव्य।
नरक - यमलोक ,यमालय ,दुर्गति ,कुम्भीपाक .
नित्य - सदा ,सर्वदा ,सतत ,निरंतर .
निरादर - अपमान ,उपेक्षा ,अवहेलना ,तिरस्कार ,अवज्ञा .
नाव -नौका ,बेडा , तरणी,जलयान ,जलवाहन.
पवन - वायु , हवा, समीर , वात , मारुत , अनिल, पवमान ।
पहाड़ - पर्वत , गिरी , अचल , नग, भूधर , महीधर ।
पक्षी - खग, चिडिया , गगनचर , पखेरू , विहंग , नभचर ।
पानी - जल ,नीर ,वारि ,सलिल ,अंबु.
पार्वती - उमा,गिरिजा ,गौरी ,शिवा ,भवानी ,अम्बिका .
पति - स्वामी , प्राणाधार , प्राणप्रिय, प्राणेश, आर्यपुत्र।
पत्नी - गृहणी , बहु , वनिता , दारा, जोरू ,वामांगिनी ।
पुत्र - बेटा , आत्मज, वत्स , तनुज , तनय, नंदन ।
पुत्री - बेटी, आत्मजा , तनूजा, सुता , तनया ।
पुष्प - फूल , सुमन , कुसुम , मंजरी , प्रसून ।
पृथ्वी - धरती ,धरा ,भू ,भूमि ,जमीन,वसुंधरा ,धरणी .
बादल - मेघ, घन , जलधर , जलद, वारिद, नीरद , सारंग ।
बालू - रेत , बालुका , सैकत ।
बन्दर - वानर , कपि, कपीश, हरि।
बिजली - घनप्रिया , इन्द्रवज्र, चपला , दामिनी , ताडित, विद्युत ।
ब्रह्मा- अज ,विधि ,विधाता ,प्रजापति ,निर्माता ,धाता ,चतुरानन ,प्रजाधिप .
बाण - तीर ,शर ,सायक ,शिलीमुख .
विष - जहर , हलाहल , गरल , कालकूट ।
वृक्ष - पेड़ , पादप , विटप , तरु , गाछ ।
विष्णु - नारायण , दामोदर , पीताम्बर , चक्रपाणी ।
भूषण - जेवर , गहना, आभूषण , अलंकार ।
भौरा - भ्रमण ,भँवरा,भृंग ,मिलिंद ,सारंग ,मधुप .
महेश - महादेव ,नीलकंठ ,चंद्रशेखर ,गंगाधर ,रूद्र ,शिव ,विश्वनाथ .
मनुष्य - आदमी , नर, मानव, मानुष , मनुज ।
मदिरा- शराब , हाला, आसव, मधु, मद।
मोर- केक , कलापी, नीलकंठ , नर्तकप्रिय ।
मधु - शहद , रसा, शहद, कुसुमासव ।
मृग - हिरण, सारंग , कृष्णसार।
मछली - मीन , मत्स्य , जलजीवन , शफरी , मकर ।
मूर्ख - गँवार,अल्पमति ,अज्ञानी ,अपढ़ ,जड़ .

मृत्यु - देहांत ,मौत , अंत ,स्वर्गवास ,मरण .
मोक्ष -मुक्ति ,परधाम ,निर्वाण , परमपद ,अपवर्ग .
यमराज - धर्मराज ,यम ,अन्तक ,सूर्यपुत्र, दंडधर .
रात - रात्रि, रैन , रजनी , निशा , यामिनी , तमी, निशि , यामा।
राजा - नृप, भूप, भूपाल , नरेश , महीपति , अवनीपति ।
लक्ष्मी- कमला ,पद्मा ,रमा,हरिप्रिया ,श्री ,इंदिरा ।
विवाह - शादी ,गठबंधन ,परिणय ,व्याह ,पाणिग्रहण .
समूह - गण,झुण्ड ,संघ ,वृन्द ,समुदाय .
वायु - पवन ,अनिल ,समीर, हवा ,वात .
वस्त्र - कपडा , वसन ,अम्बर ,परिधान ,पट .
विष - जहर ,हलाहल ,माहुर ,गरल ,कालकूट .
साँप - सर्प , नाग , विषधर , उरग , पवनासन।
शिव - भोलेनाथ ,शम्भू, त्रिलोचन , महादेव, नीलकंठ , शंकर।
सूर्य - रवि , सूरज , दिनकर, प्रभाकर, आदीत्य, भास्कर , दिवाकर।
संसार- जग, विश्व , जगत , लोक , दुनिया ।
शरीर - देह , तनु , काया , कलेवर , अंग , गात ।
सोना - स्वर्ण , कंचन, कनक , हेम , कुंदन ।
स्त्री - अबला ,नारी ,महिला ,रमणी ,दारा,कान्ता.
सिंह - केशरी, शेर, महावीर, नाहर, सारंग , मृगराज ।
सेना - वाहिनी ,कटक ,चमू .
समुद्र - सागर, पयोधि, उदधि , पारावार, नदीश ,जलधि ।
हनुमान - महावीर ,पवनसुत ,रामदूत ,मारुती ,कपीश ,बजरंगबली .
हर्ष - आनंद ,प्रसन्नता ,प्रमोद ,सुख ,आमोद .
हाथी - गज ,सिंघु ,हस्ती ,नाग ,मतंग,गजेन्द्र .
शत्रु - रिपु , दुश्मन , अमित्र , वैरी ।
हिमालय - हिमगिरी , हिमाचल , गिरिराज , पर्वतराज , नगेश।
ह्रदय - छाती , वक्ष , वक्षस्थल , हिय , उर ।
असुर - दनुज, निशाचर, राक्षस ,दैत्य ,दानव ,रजनीचर ,यातुधान
अमृत - पीयूष , सुधा ,अमिय ,सोम ,सुरभोग ,मधु
अर्जुन - धनंजय , पार्थ , भारत ,गांडीवधारी ,कौन्तेय ,गुडाकेश
अरण्य - जंगल ,वन ,कान्तार ,कानन ,विपिन
अंग - अंश ,भाग ,हिस्सा ,अवयव
आँख - नेत्र ,चक्षु ,लोचन ,दृग ,अक्षि ,विलोचन
आम्र - आम ,रसाल ,सहकार, अतिसौरभ ,पिकवल्लभ
आकाश - अम्बर ,गगन ,नभ , व्योम , शून्य ,अनन्त ,आसमान ,अन्तरिक्ष

अनी - सेना ,फौज ,चमू ,दल ,कटक
इच्छा - कामना ,चाह , आकांक्षा ,मनोरथ ,स्पृहा ,वांछा ,ईहा ,अभिलाषा
इन्द्र - सुरेश ,सुरेन्द्र ,सुरपति ,शचीपति ,देवेन्द्र ,देवेश ,वासव ,पुरन्दर
कमल - राजीव ,पुण्डरीक ,जलज ,पंकज ,सरोज ,सरोरुह ,नलिन ,तामरस ,कंज,अरविन्द, अम्बुज ,सरसिज
किरण - अंशु ,रश्मि ,कर ,मयूख , मरीचि ,प्रभा ,अर्चि
कपड़ा - वस्त्र ,पट ,चीर ,अम्बर ,वसन
कुबेर - धनद ,धनेश ,धनाधिप ,राजराज ,यक्षपति
कामदेव - मनसिज ,मनोज ,काम ,मन्मथ ,मार ,अनंग ,पुष्पधन्वा ,मदन ,कंदर्प , मकरध्वज ,रतिनाथ ,मीनकेतु
कृष्ण - गोविन्द ,गोपाल ,माधव ,कंसारि ,यशोदानन्दन ,देवकीपुत्र ,वासुदेव ,नन्दनन्दन , हरि ,श्याम ,मुरारि ,राधावल्लभ ,यदुराज ,कान्ह ,कन्हैया
कल्पवृक्ष - भंडार ,सुरतरु ,पारिजात ,कल्पद्रुम ,कल्पतरु
कोयल - पिक ,परभृत ,कोकिल ,वसंतदूती ,वसंतप्रिय
गणेश - लम्बोदर ,गजपति ,गणपति ,एकदन्त ,विनायक ,गजवदन ,मोदकप्रिय , मूषकवाहन ,भवानीनन्दन ,गौरीसुत , गजानन
गधा - गदहा ,गर्दभ ,वैशाखनन्दन,रासभ ,खर ,धूसर
गंगा - भागीरथी ,जाह्नवी ,मन्दाकिनी ,विष्णुपदी ,देवापगा ,देवनदी ,सुरसरिता ,सुरसरि
गर्व - अहं ,अहंकार ,दर्प ,दम्भ ,अभिमान ,घमण्ड
गाय - धेनु ,गौ ,सुरभि ,गैया ,दोग्धी ,पयस्विनी ,गऊ
चतुर - दक्ष ,पटु ,कुशल ,नागर ,विज्ञ ,निपुण

चन्द्रमा -चन्द्र ,राकापति ,राकेश ,मयंक ,सोम ,शशि ,इन्दु ,मृगांक ,हिमकर ,सुधाकर , कलानिधि ,निशाकर
चोर - दस्यु ,तस्कर ,रजनीचर ,साहसिक ,खनक ,मोषक ,कुम्भिल
जमुना - यमुना ,रविजा ,कालिन्दी ,अर्कजा ,सूर्यसुता ,रवितनया ,तरणि-तनूजा, कृष्णा
जीभ - जिह्वा , रसना ,रसिका ,रसला ,रसज्ञा ,जबान
झण्डा - ध्वजा ,पताका ,केतु ,केतन ,ध्वज
द्रव्य - धन, दौलत ,वित्त ,संपत्ति ,सम्पदा ,विभूति
द्रौपदी - कृष्णा ,द्रुपदसुता ,पांचाली ,याज्ञसेनी ,सैरन्ध्री
धनुष- धनु ,चाप ,कमान ,शरासन, पिनाक ,कोदण्ड
नदी - सरिता ,तटिनी ,आपगा ,निम्नगा ,तरंगिणी ,वाहिनी ,स्रोतस्विनी
नाव - नौका ,तरणि ,तरी ,नैया ,वहित्र ,डोंगी
पृथ्वी - भू,भूमि ,इला ,धरती ,धरित्री ,मेदिनी ,अचला ,वसुधा ,वसुन्धरा ,उर्वी
पत्र - पत्ता ,दल ,पल्लव ,पर्ण ,किसलय

पण्डित - प्राज्ञ ,कोविद ,मनीषी ,विद्वान ,सुधी ,विचक्षण
पुष्प - फूल ,कुसुम, सुमन ,प्रसून ,पुहुप ,फुल्ल
प्रकाश - प्रभा ,कान्ति ,ज्योति ,उजाला ,द्युति
बाण - शर , शिलीमुख ,नाराच, विशिख ,इषु ,तीर
ब्रह्मा - विधि ,विधाता ,स्वयंभू ,चतुरानन ,चतुर्मुख ,कमलासन ,पितामह ,हिरण्यगर्भा
बिजली - चपला ,चंचला ,सौदामिनी ,विद्युत ,दामिनी ,तड़ित ,क्षणप्रभा ,बीजुरी
बन्दर - कपि ,वानर ,शाखामृग ,मर्कट ,हरि
वृक्ष - तरु ,विटप,पादप ,पेड़ ,रुख ,द्रुम

मित्र -सखा ,मीत ,दोस्त ,सहचर ,सुहृद
महेश - शिव ,शंकर ,भूतनाथ ,चन्द्रशेखर ,चन्द्रमौलि ,भोले ,रूद्र ,त्रिलोचन ,त्रिनेत्र , आशुतोष ,पशुपति ,शम्भु
मछली - मत्स्य ,मीन ,शफरी ,झष ,जलजीवन
मनुष्य - मनुज ,आदमी ,इंसान ,मानव ,मनुपुत्र ,नर, व्यक्ति
मदिरा -शराब ,मद्य ,सुरा ,सोमरस ,मधु ,आसव ,वारुणी ,हाला
माला - हार ,मालिका ,दाम ,गुणिका ,सुमिरनी ,माल्य
मोती - मुक्ता , मौक्तिक ,शशिप्रभा ,सीपिज
मुक्ति - मोक्ष ,कैवल्य ,परमपद ,सदगति ,निर्वाण ,अपवर्ग
मयूर - मोर ,नीलकंठ ,शिखी ,शिवसुतवाहन ,कलापी ,केकी
यम - यमराज ,कृतांत ,रविसुत ,धर्मराज ,काल ,अंतक ,जीवितेश ,सूर्यपुत्र ,दण्डधर
रात्रि - रात ,यामिनी ,निशा ,विभावरी ,रजनी ,शर्वरी ,क्षणदा ,रैन
लक्ष्मी - रमा ,चंचला ,विष्णुप्रिया ,कमला ,पदमा ,कमलासना ,पदमासना ,इन्दिरा , हरिप्रिया
सम्पूर्ण - सब ,पूरा ,पूर्ण ,निखिल ,अखिल ,नि:शेष ,सकल
सागर - समुद्र ,रत्नाकर ,नदीश ,पयोधि ,वारिधि ,जलधि ,उदधि ,जलनिधि ,नीरनिधि, पारावार ,सिंधु
सर्प - नाग ,भुजग ,भुजंग ,पन्नग ,उरग ,व्याल ,विषधर ,अहि ,फणी ,फणधर
सोना - स्वर्ण ,कंचन ,कांचन ,कनक , हेम ,जातरूप ,सुवर्ण ,हाटक
समूह - समुदाय ,वृन्द ,गण ,संघ ,पुंज ,दल ,झुण्ड
सूर्य - रवि ,अर्क ,भानु ,दिनेश ,दिवाकर ,भास्कर ,सविता ,आदित्य ,अंशुमाली , मार्तण्ड ,दिनकर
सिंह - हरि ,व्याघ्र ,शार्दूल ,केशरी ,कहेरी ,मृगेन्द्र ,मृगराज ,पंचमुख

सुन्दर - रुचिर ,चारू ,रम्य ,रमणीक ,मनभावन ,ललित ,आकर्षक ,मंजुल ,कलित , सुरम्य ,कमनीय ,सुहावना
सेविका - दासी ,नौकरानी ,परिचारिका ,भृत्या ,किंकरी ,अनुचरी
स्तन - पयोधर ,उरोज ,कुच ,वक्षोज

हिमालय - नगराज ,गिरीश ,गिरिवर ,पर्वतेश ,पर्वतराज ,हिमाद्रि ,हिमगिरी ,हिमवान
हाथी - हस्ती ,कुंजर ,नाग ,सिन्धुर ,दन्ती ,करि ,द्विरद , गयंद ,गज ,मातंग
हाथ - हस्त ,भुजा ,पाणि ,कर ,बाहु
हिरन - हरिण ,सारंग ,मृग ,कुरंग ,सुरभी
हवा - पवन ,वायु ,वात ,समीर ,प्रभंजन ,अनिल ,समीरण
हनुमान - पवनपुत्र ,पवनसुत ,कपीश ,बजरंगी ,महावीर ,आंजनेय ,मारुति ,पवनकुमार , रामदूत ,वज्रांगी ,जितेन्द्रिय
हंस - मराल ,चक्रांग ,कलहंस ,मानसीक
हितैषी - शुभेच्छु , हितकायी ,मंगलाकांक्षी ,शुभचिंतक ,हितचिन्तक
मुर्गा - कुक्कुट ,ताम्रचुड़ ,अरुणशिखा ,ताम्रशिख ,उपाकर
भ्रमर - अलि ,मधुकर ,भंवर ,भौंए ,षटपद ,भृंगी
धूल - रज ,माटी ,मिट्टी ,मृत्तिका ,रेणु ,धूलि
पत्थर - पाहन ,पाषण ,शिला ,प्रस्तर ,उपल ,अश्म
तारा - नक्षत्र ,सितारा ,उडु ,तारक
तलवार - असि ,कृपाण ,करवाल ,चन्द्रहास ,खड्ग
दांत - दन्त ,रद ,द्विज ,मुखनुर
बाल - केश ,कच ,कुंतल ,चिकुर ,जटा ,शिरोरुह
कली - मुकुल ,कलिका ,कोरक ,जालक
बहुत - प्रभूत ,प्रचुर ,अपरिमित ,अमित ,अपार ,विपुल
राधा - कृष्ण बल्लभ ,कृष्णप्रिया ,हरिप्रिया ,राधिका ,वृषभानुसुता ,वृषभानुदुलारी , वृषभानुजा ,बृजरानी
वर्षा - बारिश, बरसात ,पावस ,वृष्टि ,वर्षण
विवाह - ब्याह ,शादी ,पाणिग्रहण ,परिणय
सहेली - सखी ,आली ,अलि ,भटू ,सहचरी ,संगिनी ,सहचारिणी
साधु - साधू ,संत ,वैरागी ,संन्यासी ,महात्मा
पुत्र - सुत, बेटा ,तनय ,आत्मज ,तनुज ,नन्दन ,अपत्य
पुत्री - सुता ,बेटी ,तनया ,आत्मजा ,तनुजा ,नन्दिनी ,दुहिता
धन - श्री ,सम्पत्ति ,सम्पदा ,लक्ष्मी ,वित्त ,अर्थ
बादल - पयोद ,जलज ,अम्बुद ,मेघ ,वारिद ,जलधर ,नीरद ,पयोधर ,वारिधर
ब्राह्मण - द्विज ,भूसुर ,भूदेव ,विप्र ,पण्डित
विष्णु - हरि ,श्रीपति ,लक्ष्मीपति ,चतुर्भुज ,रमापति ,रमेश ,चक्रपाणि ,जनार्दन ,मुकुन्द, नारायण ,माधव ,केशव,अच्युत
अग्नि - आग ,अनल,पावक ,हुताशन,कृशानु ,दहन ,वह्नि ,ज्वाला ,कपिल,शिखि ,धुमध्वज
अतिथि - अभ्यागत ,पाहुन ,आगन्तुक ,मेहमान
अश्व - घोड़ा ,हय ,बाजि ,घोटक ,तुरंग ,सैन्धव

चरण - पैर ,पाद ,पाँव ,पग ,पद

Hindi Idioms (हिंदी मुहावरे)

छिछा लेदर करना - दुर्दशा करना
टिप्पस लगाना - सिफारिश करना
टेक निभाना - प्रण पूरा करना
तारे गिनना - नींद न आना
त्रिशंकु होना - अधर में लटकना
मजा चखाना - बदला लेना
मन मसोसना - विवश होना
हाथ पसारना - मांगना
हाथ मलना - पछताना
हालत पतली होना - दयनीय दशा होना
सेमल का फूल होना - थोडें दिनों का असितत्व होना
सब्जबाग दिखाना - झूठी आशा देना
भुजा उठाकर कहना - प्रतिज्ञा करना
हाथ के तोते उड़ना - घबरा जाना
अंगूठा दिखाना - मना कर देना
अक्ल सठियाना - बुद्धि भ्रष्ट होना
अंगूठे पर रखना - परवाह न करना
अपना उल्लू सीधा करना - अपना काम बना लेना
अपनी खिचड़ी अलग पकाना - सबसे अलग रहना
आँखों का तारा - बहुत प्यारा
आँखें बिछाना - स्वागत करना
आँखों में धूल झोंकना - धोखा देना
आग बबूला होना - अत्यधिक क्रोध करना
आस्तिन का सांप होना - कपटी मित्र
आँखें दिखाना - धमकाना
आसमान टूट पड़ना - अचानक मुसीबत आ जाना
आसमान पर दिमाग होना - अहंकारी होना
ईंट का जवाब पत्थर से देना - करारा जवाब देना
ईद का चाँद होना - बहुत कम दिखाई देना
ईंट से ईंट बजाना - ध्वस्त कर देना

उल्टे छुरे से मूंढ़ना - ठग लेना
उड़ती चिड़िया के पंख गिनना - अत्यन्त चतुर होना
ऊंट के मुंह में जीरा होना - अधिक खुराक वाले को कम देना
एड़ी चोटी का जोर लगाना - बहुत प्रयास करना
ओखली में सिर देना - जान बूझकर मुसीबत मोल लेना
औंधी खोपड़ी का होना - बेवकूफ होना
कलेजा ठण्डा होना - शांत होना
कलेजे पर पत्थर रखना - दिल मजबूत करना
कलेजे पर सांप लोटना - अन्तर्दाह होना
कलेजा मुंह को आना - घबरा जाना
काठ का उल्लू होना - मूर्ख होना
कान काटना - चतुर होना
कान खड़े होना - सावधान हो जाना
काम तमाम करना - मार डालना
कुएं में बांस डालना - बहुत खोजबीन करना
कलई खुलना - पोल खुलना
कलेजा फटना - दुःख होना
कीचड़ उछालना - बदनाम करना
खून खौलना - क्रोध आना
खून का प्यासा होना - प्राण लेने को तत्पर होना
खाक छानना - भटकना
खटाई में पड़ना - व्यवधान आ जाना
गाल बजाना - डींग हांकना
गूलर का फूल होना - दुर्लभ होना
गांठ बांधना - याद रखना
गुड़ गोबर कर देना - काम बिगाड़ देना
घाट -घाट का पानी पीना - अनुभवी होना
घी के दिए जलाना - प्रसन्न होना
घुटने टेकना - हार मानना
घड़ों पानी पड़ना - लजिज्त होना
चाँद का टुकड़ा होना - बहुत सुंदर होना
चिकना घड़ा होना - बात का असर न होना
चांदी काटना - अधिक लाभ कमाना
चांदी का जूता मारना - रिश्वत देना
छक्के छुड़ाना - परास्त कर देना

छप्पर फाड़कर देना - अनायास लाभ होना
छटी का दूध याद आना - अत्यधिक कठिन होना
छाती पर मूंग दलना - पास रहकर दिल दु:खाना
छूमन्तर होना - गायब हो जाना
छाती पर सांप लोटना - ईर्ष्या करना
जबान को लगाम देना - सोच समझकर बोलना
जान के लाले पड़ना - प्राण संकट में पड़ना
जी खट्टा होना - मन फिर जाना
जमीन पर पैर न रखना - अहंकार होना
जहर उगलना - बुराई करना
जान पर खेलना - प्राणों की बाजी लगाना
टेढ़ी खीर होना - कठिन कार्य
टांग अड़ाना - दखल देना
टें बोल जाना - मर जाना
ठकुर सुहाती कहना - खुशामद करना
डकार जाना - हड़प लेना
ढोल की पोल होना - खोखला होना
तीन तेरह होना - बिखर जाना
तलवार के घाट उतारना - मार डालना
थाली का बैगन होना - सिद्धांतहीन होना
दांत काटी रोटी होना - गहरी दोस्ती
दो -दो हाथ करना - लड़ना
धूप में बाल सफेद होना - अनुभव होना
धाक जमाना - प्रभावित करना
नाकों चने चबाना - बहुत सताना
नाक -भौं सिकोड़ना - अप्रसन्नता व्यक्त करना
पत्थर की लकीर होना - अमिट होना
पेट में दाढ़ी होना - कम उम्र में अधिक जानना
पौ बारह होना - खूब लाभ होना
कालानाग होना - बहुत घातक व्यक्ति
केर -बेर का संग होना - विपरीत मेल
धोंधा वसंत होना - मूर्ख व्यक्ति
घूरे के दिन फिरना - अच्छे दिन आना
चंडूखाने की बातें करना - झूठी बातें होना
चंडाल चौकड़ी - दुष्टों का समूह

छिछा लेदर करना - दुर्दशा करना
टिप्पस लगाना - सिफारिश करना
टेक निभाना - प्रण पूरा करना
तारे गिनना - नींद न आना
त्रिशंकु होना - अधर में लटकना
मजा चखाना - बदला लेना
मन मसोसना - विवश होना
हाथ पसारना - मांगना
हाथ मलना - पछताना
हालत पतली होना - दयनीय दशा होना
सेमल का फूल होना - थोडें दिनों का असितत्व होना
सब्जबाग दिखाना - झूठी आशा देना
भुजा उठाकर कहना - प्रतिज्ञा करना
हाथ के तोते उड़ना - घबरा जाना

Others Examples

अंग अंग ढीला होना
Ans : बहुत मारना
अंग अंग मुसकाना
Ans : अन्यंत प्रसन्न होना
अंग न लगना
Ans : खाने पीने का असर न होना

अंगारे उगलना
Ans : क्रोध मे आकर कठोर शब्द कहना
अंगारो पर लेटना
Ans : बहुत परेशान होना
अंगुली उठाना
Ans : निन्दित होना
अंगुली पर नाचना
Ans : वश मे रखना
अंगुठा दिखाना
Ans : मौके पर काम ना आना

आंचल पसारना
Ans : रक्षा की याचना करना
अंतडियो मे बल पडना
Ans : बहुत हसना
अंत करना
Ans : मार डालना
अन्धा क्या चाहे दो आंखे
Ans : आव्श्यक वस्तु की प्राप्ति
अन्धा बन जाना
Ans : धोखे मे आ जाना

अन्धेर नगरी चौपट राजा
Ans : अव्यवस्था होना
अक्ल क दुश्मन
Ans : बुद्धिहीन
अक्ल चरने जाना
Ans : बुद्धी से काम ना करना
अक्ल बडी कि भैंस
Ans : सशक्त शरीर मे ही बुद्धि का निवास नही होता
अखाडा मारना
Ans : विजय प्राप्त करना
अग्नि मे घी डालना
Ans : क्रोध बढाना
अच्छे दिन देखना
Ans : सुख सुविधा से जीवन यापन करना
अठखेलिया करना
Ans : दिल्लगी करना
अपने पाव पर कुल्हाडी मारना
Ans : अपना नुक्सान खुद करना
आंख उठा कर भी ना देखना
Ans : ध्यान तक न देना
आंखे नीची होना
Ans : शर्मिन्दा होना
आंखे चुराना
Ans : शर्म के कारण सामने ना आना

आंखे मिलाना

Ans : सामना करना

आंखे बिछाना

Ans : सम्मानपूर्वक प्रेम करना

आग लगाने पर कुआ खोदना

Ans : आपत्ति आने पर उसका उपाय ढूंढना

आपे मे न होना

Ans : क्रोध मे भडक उठना

आयु क पट्टा लिखा कर लाना

Ans : बहुत दिन जीना

आस्तीन का साप होना

Ans : छुपा दुश्मन होना

आसमान से बाते करना

Ans : तेज दौडना

इज्जत बिगाडना

Ans : अप्रतिष्ठित करना

इति श्री करना

Ans : समाप्त करना

इधर उधर की लगाना

Ans : झगडा करना

ईंट से ईंट बजाना

Ans : ध्वस्त कर देना

उडती चिडिया पहचानना

Ans : चालाकी भाप जाना

उल्लू बनाना

Ans : बेवकूफ बनाना

उंची दुकान, फीका पकवान

Ans : नाम बडे दर्शन थोडे

ऊसर मे बीज बोना

Ans : निरर्थक परिश्रम करना

एक पंथ दे काज

Ans : एक उद्योग से दोहरा फायदा उठना

ओखली मे सिर देना

Ans : जान बूझकर स्वयम को विपत्ति मे फंसाना

आन्धी खोपडी
Ans : निपट मूर्ख
कंघी चोटी से फुर्सत न मिलना
Ans : सदा सिंगार करते रहना
कंगाली मे आटा गीला
Ans : विपत्ति पर विपत्ति आना
कंचन बरसना
Ans : अधिक धन की प्राप्ति होना
कपाल क्रिया करना
Ans : सिर फोड देना
कच्चा चिट्ठा खोलना देना
Ans : पोल खोलना
कलेजा पसीजना
Ans : दया उत्पन्न होना
कलेजे से लगाकर रखना
Ans : बहुत प्रेम करना
कागजी घोडे दौडाना
Ans : केवल लिखापडी करते रहना
काटो तो खून नही
Ans : बहुत भयभीत होने की दशा
कानो मे तेल डालकर बैठना
Ans : किसी की बात न सुनना
काम का न काज का दुश्मन अनाज का
Ans : कही न जाना
खयाली घोडे दौडना
Ans : कल्पनाये करते रहना
खिसियानी बिल्ली खम्बा नीचे
Ans : लज्जित होकर किसी दूसरे पर क्रोध करना
खुशामदी टट्टू
Ans : अमीरो की चापलूसी करना

Proverbs कहावतें तथा लोकोक्तिया

अपनी करनी पार उतरनी = जैसा करना वैसा भरना

आधा तीतर आधा बटेर = बेतुका मेल
अधजल गगरी छलकत जाए = थोड़ी विद्या या थोड़े धन को पाकर वाचाल हो जाना
अंधों में काना राजा = अज्ञानियों में अल्पज्ञ की मान्यता होना
अपनी अपनी ढफली अपना अपना राग = अलग अलग विचार होना
अक्ल बड़ी या भैंस = शारीरिक शक्ति की तुलना में बौद्धिक शक्ति की श्रेष्ठता होना
आम के आम गुठलियों के दाम = दोहरा लाभ होना
अपने मुहं मियाँ मिट्ठू बनना = स्वयं की प्रशंसा करना
आँख का अँधा गाँठ का पूरा = धनी मूर्ख
अंधेर नगरी चौपट राजा = मूर्ख के राजा के राज्य में अन्याय होना
आ बैल मुझे मार = जान बूझकर लड़ाई मोल लेना
आगे नाथ न पीछे पगहा = पूर्ण रूप से आज़ाद होना
अपना हाथ जगन्नाथ = अपना किया हुआ काम लाभदायक होता है
अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत = पहले सावधानी न बरतना और बाद में पछताना
आगे कुआँ पीछे खाई = सभी और से विपत्ति आना
ऊंची दूकान फीका पकवान = मात्र दिखावा
उल्टा चोर कोतवाल को डांटे = अपना दोष दूसरे के सर लगाना
उंगली पकड़कर पहुंचा पकड़ना = धीरे धीरे साहस बढ़ जाना
उलटे बांस बरेली को = विपरीत कार्य करना
उतर गयी लोई क्या करेगा कोई = इज्ज़त जाने पर डर कैसा
ऊधौ का लेना न माधो का देना = किसी से कोई सम्बन्ध न रखना
ऊँट की चोरी निहुरे - निहुरे = बड़ा काम लुक - छिप कर नहीं होता
एक पंथ दो काज = एक काम से दूसरा काम
एक थैली के चट्टे बट्टे = समान प्रकृति वाले
एक म्यान में दो तलवार = एक स्थान पर दो समान गुणों या शक्ति वाले व्यक्ति साथ नहीं रह सकते
एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है = एक खराब व्यक्ति सारे समाज को बदनाम कर देता है
एक हाथ से ताली नहीं बजती = झगड़ा दोनों और से होता है
एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा = दुष्ट व्यक्ति में और भी दुष्टता का समावेश होना
एक अनार सौ बीमार = कम वस्तु , चाहने वाले अधिक
एक बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय = अकर्मण्य को कोई भी नहीं रखना चाहता
ओखली में सर दिया तो मूसलों से क्या डरना = जान बूझकर प्राणों की संकट में डालने वाले प्राणों की चिंता नहीं करते
अंगूर खट्टे हैं = वस्तु न मिलने पर उसमें दोष निकालना

कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली = बेमेल एकीकरण
काला अक्षर भैंस बराबर = अनपढ़ व्यक्ति
कोयले की दलाली में मुहं काला = बुरे काम से बुराई मिलना
काम का न काज का दुश्मन अनाज का = बिना काम किये बैठे बैठे खाना
काठ की हंडिया बार बार नहीं चढ़ती= कपटी व्यवहार हमेशा नहीं किया जा सकता
का बरखा जब कृषि सुखाने = काम बिगड़ने पर सहायता व्यर्थ होती है
कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर = समय पड़ने पर एक दुसरे की मदद करना
खोदा पहाड़ निकली चुहिया = कठिन परिश्रम का तुच्छ परिणाम
खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे = अपनी शर्म छिपाने के लिए व्यर्थ का काम करना
खग जाने खग की ही भाषा = समान प्रवृति वाले लोग एक दुसरे को समझ पाते हैं
गंजेड़ी यार किसके, दम लगाई खिसके = स्वार्थ साधने के बाद साथ छोड़ देते हैं
गुड़ खाए गुलगुलों से परहेज = ढोंग रचना
घर की मुर्गी दाल बराबर = अपनी वस्तु का कोई महत्व नहीं
घर का भेदी लंका ढावे = घर का शत्रु अधिक खतरनाक होता है
घर खीर तो बाहर भी खीर = अपना घर संपन्न हो तो बाहर भी सम्मान मिलता है
चिराग तले अँधेरा = अपना दोष स्वयं दिखाई नहीं देता
चोर की दाढ़ी में तिनका = अपराधी व्यक्ति सदा सशंकित रहता है
चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए = कंजूस होना
चोर चोर मौसेरे भाई = एक से स्वभाव वाले व्यक्ति
जल में रहकर मगर से बैर = स्वामी से शत्रुता नहीं करनी चाहिए
जाके पाँव न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर पराई = भुक्तभोगी ही दूसरों का दुःख जान पाता है
थोथा चना बाजे घना = ओछा आदमी अपने महत्व का अधिक प्रदर्शन करता है
छाती पर मूंग दलना = कोई ऐसा काम होना जिससे आपको और दूसरों को कष्ट पहुंचे
दाल भात में मूसलचंद = व्यर्थ में दखल देना
धोबी का कुत्ता घर का न घाट का = कहीं का न रहना
नेकी और पूछ पूछ = बिना कहे ही भलाई करना
नीम हकीम खतरा ए जान = थोडा ज्ञान खतरनाक होता है
दूध का दूध पानी का पानी = ठीक ठीक न्याय करना
बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद = गुणहीन गुण को नहीं पहचानता
पर उपदेश कुशल बहुतेरे = दूसरों को उपदेश देना सरल है
नाम बड़े और दर्शन छोटे = प्रसिद्धि के अनुरूप गुण न होना
भागते भूत की लंगोटी सही = जो मिल जाए वही काफी है
मान न मान मैं तेरा मेहमान = जबरदस्ती गले पड़ना
सर मुंडाते ही ओले पड़ना = कार्य प्रारंभ होते ही विघ्न आना

हाथ कंगन को आरसी क्या = प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत है
होनहार बिरवान के होत चिकने पात = होनहार व्यक्ति का बचपन में ही पता चल जाता है
बद अच्छा बदनाम बुरा = बदनामी बुरी चीज़ है
मन चंगा तो कठौती में गंगा = शुद्ध मन से भगवान प्राप्त होते हैं
आँख का अँधा, नाम नैनसुख = नाम के विपरीत गुण होना
ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया = संसार में कहीं सुख है तो कहीं दुःख है
उतावला सो बावला = मूर्ख व्यक्ति जल्दबाजी में काम करते हैं
ऊसर बरसे तृन नहिं जाए = मूर्ख पर उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता
ओछे की प्रीति बालू की भीति = ओछे व्यक्ति से मित्रता टिकती नहीं है
कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा = सिद्धांतहीन गठबंधन
कानी के ब्याह में सौ जोखिम = कमी होने पर अनेक बाधाएं आती हैं
को उन्तप होब ध्यहिंका हानी = परिवर्तन का प्रभाव न पड़ना
खाल उठाए सिंह की स्यार सिंह नहिं होय = बाहरी रूप बदलने से गुण नहीं बदलते
गागर में सागर भरना = कम शब्दों में अधिक बात करना
घर में नहीं दाने , अम्मा चली भुनाने = सामर्थ्य से बाहर कार्य करना
चौबे गए छब्बे बनने दुबे बनकर आ गए = लाभ के बदले हानि
चन्दन विष व्याप्त नहीं लिपटे रहत भुजंग = सज्जन पर कुसंग का प्रभाव नहीं पड़ता
जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ = दुष्टों की प्रवृति एक जैसी होना
डेढ़ पाव आटा पुल पै रसोई = थोड़ी सम्पत्ति पर भारी दिखावा
तन पर नहीं लत्ता पान खाए अलबत्ता = झूठी रईसी दिखाना
पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं = पराधीनता में सुख नहीं है
प्रभुता पाहि काहि मद नहीं = अधिकार पाकर व्यक्ति घमंडी हो जाता है
मेंढकी को जुकाम = अपनी औकात से ज्यादा नखरे
शौक़ीन बुढिया चटाई का लहंगा = विचित्र शौक
सूरदास खलकारी का या चिदै न दूजो रंग = दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता
तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार = दृढ प्रतिज्ञ लोग अपनी बात पे डटे रहते हैं
सौ सुनार की, एक लुहार की = निर्बल की सौ चोटों की तुलना में बलवान की एक चोट काफी है
भई गति सांप छछूंदर केरी = असमंजस की स्थिति में पड़ना
पुचकारा कुत्त सिर चढ़े = ओछे लोग मुहं लगाने पर अनुचित लाभ उठाते हैं
मुहं में राम बगल में छुरी = कपटपूर्ण व्यवहार
जंगल में मोर नाचा किसने देखा = गुण की कदर गुणवानों के बीच ही होती है
चट मंगनी पट ब्याह = शुभ कार्य तुरंत संपन्न कर देना चाहिए
ऊंट बिलाई लै गई तौ हाँजी-हाँजी कहना = शक्तिशाली की अनुचित बात का समर्थन करना
तीन लोक से मथुरा न्यारी = सबसे अलग रहना

Others Examples

1. मानो तो देव, नहीं तो पत्थर - **विश्वास ही फलदायक**
2. आम का आम गुठली का दाम - **सब तरह से लाभ-ही-लाभ**
3. घर की मुर्गी दाल बराबर - **घर की वस्तु का कोई आदर नहीं करना**
4. बिल्ली के भाग्य से छींका (सिकहर) टूटा - **संयोग अच्छा लग गय**
5. ऊँचे चढ़ के देखा, तो घर-घर एकै लेखा - **सभी एक समान**
6. रोजा बख्शाने गये, नमाज लगे पड़ी - **लाभ के बदले हानि**
7. मुँह में राम, बगल में छुरी - **कपटी**
8. इस हाथ दे, उस हाथ ले - **कर्मों का फल शीघ्र पाना**
9. मोहरों की लूट, कोयले पर छाप - **मूल्यवान वस्तुओं को छोड़कर तुच्छ वस्तुओं पर ध्यान देना**
10. गुड़ खाय गुलगुले से परहेज - **बनावटी परहेज**
11. नाम बड़े, पर दर्शन थोड़े - **गुण से अधिक बड़ाई**
12. लश्कर में ऊँट बदनाम - **दोष किसी का, बदनामी किसी की**
13. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे - **अपराधी ही पकड़नेवाली को डाँट बताये**
14. दुधारु गाय की दो लात भी भली - **जिससे लाभ होता हो, उसकी बातें भी सह लेनी चाहिए**
15. बैल का बैल गया नौ हाथ का पगहा भी गया - **बहुत बड़ा घाटा**
16. ऊँट के मुँह में जीरा - **मरूरत से बहुत कम**
17. न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी - **झगड़े के कारण को नष्ट करना**
18. भैंस के आगे बीन बजावे, भैंस रही पगुराय - **मूर्ख को गुण सिखाना व्यर्थ है**
19. खेत खाये गदहा, मार खाये जोलहा - **अपराध करे कोई, दण्ड मिले किसी और को**
20. बेकार से बेगार भली - **चुपचाप बैठे रहने की अपेक्षा कुछ काम करना**
21. खरी मजूरी चोखा काम - **अच्छे मुआवजे में ही अच्छा फल प्राप्त होना**
22. नौ की लकड़ी नब्बे खर्च - **काम साधारण, खर्च अधिक**
23. बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मिया सुभान अल्लाह - **बड़ा तो जैसा है,छोटा उससे बढ़कर है**
24. एक पंथ दो काज - **एक नहीं, दो लाभ**
25. दूध का जला मट्ठा भी फूँक-फूँक कर पीता है - **एक बार धोखा खा जाने परसावधान हो जाना**
26. बोये पेड़े बबूल के आम कहाँ से होय - **जैसी करनी, वैसी भरनी**
27. एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी - **दोष करके न मानना**
28. नीम हकीम खतरे जान - **अयोग्य से हानि**
29. भइ गति साँप-छछूँदर केरी - **दुविधा में पड़ना**

30. कबीरदास की उलटी बानी, बरसे कंबल भींगे पानी - **प्रकृतिविरुद्ध काम**
31. नाचे कूदे तोड़े तान, ताको दुनिया राखे मान - **आडम्बर दिखानेवाला मान पाता है**
32. तीन कनौजिया, तेरह चूल्हा - **जितने आदमी उतने विचार**
33. पानी पीकर जात पूछना - **कोई काम कर चुकने के बाद उसके औचित्य पर विचार करना**
34. खोदा पहाड़ निकली चुहिया - **कठिन परिश्रम, थोड़ा लाभ**
35. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं - **पराधीनता में सुख नहीं**
36. घड़ी में घर जले, नौ घड़ी भद्रा - **हानि के समय सुअवसर-कुअवसर पर ध्यान न देना**
37. कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा - **इधर-उधर से सामान जुटाकर काम करना**
38. पराये धन पर लक्ष्मीनारायण - **दूसरे का धन पाकर अधिकार जमाना**
39. थूक कर चाटना ठीक नहीं - **देकर लेना ठीक नहीं, बचन-भंग करना, अनुचित**
40. गाछे कटहल, ओठे तेल - **काम होने के पहले ही फल पाने की इच्छा**
41. गोद में छोरा नगर में ढिंढोरा - **पास की वस्तु का दूर जाकर ढूँढ़ना**
42. गरजे सो बरसे नहीं - **बकवादी कुछ नहीं करता**
43. घर का फूस नहीं, नाम धनपत - **गुण कुछ नहीं, पर गुणी कहलाना**
44. घर की भेदी लंका ढाए - **आपस की फूट से हानि होती हे**
45. घी का लड्डू टेढ़ा भला - **लाभदायक वस्तु किसी तरह की क्यों न हो**
46. चोर की दाढ़ी में तिनका - **जो दोषी होता है वह खुद डरता रहता है**
47. पंच परमेश्वर - **पाँच पंचों की राय**
48. तीन लोक से मथुरा न्यारी - **निराला ढंग**
49. तुम डाल-डाल तो हम पात-पात - **किसी की चाल को खूब समझते हुए चलना**
50. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का - **निकम्मा, व्यर्थ इधर-उधर डोलनेवाला**

विलोम(antonyms in hindi)

विलोम किसी शब्द का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्दों को **विलोम** कहते है। जैसे- सत्य-असत्य , ज्ञान - अज्ञान , नवीन -प्राचीन आदि। अत: विलोम का अर्थ है - उल्टा या विरोधी अर्थ देने वाला । एक - दूसरे के विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्द विलोम कहलाते है । कुछ विलोम शब्दों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे है -

शब्द.....विलोम

रात - दिन

अमृत - विष

अथ - इति

अन्धकार - प्रकाश
अल्पायु -दीर्घायु
इच्छा -अनिच्छ।
उत्कर्ष - अपकर्ष
अनुराग -विराग
आदि - अंत
आगामी- गत
उत्थान- पतन
आग्रह- दुराग्रह
एकता- अनेकता
अनुज- अग्रज
आकर्षण- विकर्षण
उद्यमी- आलसी
अधिक- न्यून
आदान- प्रदान
उर्वर- ऊसर
एक- अनेक
आलस्य- स्फूर्ति
अर्थ- अनर्थ
उधार- नगद
अपेक्षा- नगद
उपस्थित- अनुपस्थित
अतिवृष्टि- अनावृष्टि
उत्कृष्ट- निकृष्ट
उत्तम- अधम
आदर्श- यथार्थ
आय- व्यय
स्वाधीन- पराधीन
आहार- निराहार
दाता- याचक
खेद- प्रसन्नता
गुप्त- प्रकट
प्रत्यक्ष- परोक्ष
घृणा- प्रेम
सजीव- निर्जीव

सुगंध- दुर्गन्ध
मौखिक- लिखित
संक्षेप- विस्तार
घात- प्रतिघात
निंदा- स्तुति
मितव्यय- अपव्यय
सरस- नीरस
सौभाग्य- दुर्भाग्य
मोक्ष- बंधन
कृतज्ञ- कृतघ्न
क्रय- विक्रय
दुर्लभ- सुलभ
निरक्षर- साक्षर
नूतन- पुरातन
बंधन- मुक्ति
ठोस- तरल
यश -अपयश
सगुण- निर्गुण
मूक- वाचाल
रुग्ण- स्वस्थ
रक्षक- भक्षक
वरदान- अभिशाप
शुष्क- आर्द्र
हर्ष- शोक
क्षणिक- शाश्वत
विधि- निषेध
विधवा- सधवा
शयन- जागरण
शीत- उष्ण
सक्रिय- निष्क्रय
सफल- असफल
सज्जन- दुर्जन
शुभ- अशुभ
संतोष- असंतोष
आतुर- शांत

आगामी - विगत
आरोह- अवरोह
आचार- अनाचार
आदत्त- प्रदत्त
आदर- अनादर
आदान- प्रदान
उचित- अनुचित
आरम्भ- अंत
आह्वान- विसर्जन
आवृत- अनावृत
आकर्ष- विकर्ष
आकर्षण- विकर्षण
आद्र- शुष्क
आच्छादित- अनाछिदत
आहार- अनाहार
आशा- निराशा
आधुनिक- प्राचीन
आशीर्वाद- अभिशाप
आसक्त- अनाशक्त
आदर्श- यथार्थ
आगमन- गमन
आध्यात्मिक- भौतिक
आस्था- अनास्था
इच्छा- अनिच्छा
इहलोक- परलोक
ईश्वर- अनीश्वर
ईर्ष्या- प्रेम
उत्कर्ष- अपकर्ष
उषा- संध्या
उग्र- सौम्य
उदार- अनुदार
उचित- अनुचित
उपकार- अपकार
उत्थान- पतन
उधार- नगद

उन्नति- अवनति
उपयुक्त- अनुपयुक्त
उपाय- निरुपाय
एकांगी- सर्वांगीण
कनिष्ठ- ज्येष्ठ
कृष- स्थूल
कृष्ण- शुक्ल
गुप्त- प्रकट
ग्रामीण- शहरी
घात- प्रतिघात
छली- निश्चल
छूत- अछूत
जल- थल
जन्म- मृत्यु
जंगली- पालतू
दयालु- निर्दयी
धीर- अधीर
नख- शिख
निरक्षर- साक्षर
निंदा- प्रशंसा
पक्ष- विपक्ष
पूर्ण- अपूर्ण
परकीया- स्वकीया
बंधन- मुक्ति
भद्र- अभद्र
भाव- अभाव
मौखिक- लिखित
राग- विराग
विधवा- सधवा
शयन- जागरण
शीत- उष्ण
घात- प्रतिघात
घृणा- प्रेम
चल- अचल
जटिल- सरल

ठोस- तरल
दाता- याचक
निर्मल- मलिन
नस्वर-अनश्वर
प्रभु- दास
बाढ़- सूखा
मानव- दानव
मिलन- विछोह
मूक- वाचाल
रहित- सहित
रात्री- दिवस
लोभ- संतोष
विपन्न- संपन्न
विशुद्ध- दूषित
विरोध- समर्थन
शकुन- अपशकुन
सामिष- निरामिष
सूक्ष्म- स्थूल
हास्य- रुदन
तरुण- वृद्ध
दुर्लभ- सुलभ
पंडित- मूर्ख
पतिव्रता- कुलटा
प्रत्यक्ष- परोक्ष
भूत- भविष्य
मनुष्यता- पशुता
मिथ्या- सत्य
मोक्ष- बंधन
योगी- भोगी
सजीव- निर्जीव
अग्नि- जल
अनाथ- सनाथ
अर्पण- ग्रहण
अथ- इति
अस्त- उदय

अगम- सुगम
अपेक्षा- उपेक्षा
अकाल- सुकाल
आयात- निर्यात
असली- नकली
अज्ञ- विज्ञ
अमर- मर्त्य
अधम- उत्तम

अग्र - पश्च
अज्ञ - विज्ञ
अमृत -विष
अथ - इति
अघोष - सघोष
अधम - उत्तम
अपकार - उपकार
अपेक्षा - उपेक्षा
अस्त - उदय
अनुरक्त - विरक्त
अनुराग - विराग
अन्तरंग - बहिरंग
अवतल - उत्तल
अवर - प्रवर
अमर - मर्त्य
अर्पण - ग्रहण
अवनि - अम्बर
अपमान - सम्मान
अतिवृष्टि - अनावृष्टि
अनुकूल - प्रतिकूल
अन्तर्द्वन्द्व - बहिर्द्वन्द्व
अग्रज - अनुज
अकाल - सुकाल
अर्थ - अनर्थ
अँधेरा - उजाला
अपेक्षित - अनपेक्षित

आदि - अन्त
आस्तिक - नास्तिक
आरम्भ - समापन
आहूत - अनाहूत
आयात - निर्यात
आभ्यन्तर - बाह्य
आवृत - अनावृत
आशा - निराशा
आरोहण - अवरोहण
आस्था - अनास्था
आर्द्र - शुष्क
आकाश - पाताल
आवाहन - विसर्जन
आविर्भाव - तिरोभाव
आरोह - अवरोह
आदान - प्रदान
आगामी - विगत
आदर -अनादर
आकर्षण - विकर्षण
आर्य - अनार्य
आश्रित - अनाश्रित
इष्ट - अनिष्ट
इहलोक - परलोक
उग्र - सौम्य
उदात्त - अनुदात्त
उत्कृष्ट - निकृष्ट
उपसर्ग - परसर्ग
उन्मुख - विमुख
उन्नत - अवनत
उद्दत - विनीत
उपमान - उपमेय
उपत्यका - अधित्यका
उत्तरायण - दक्षिणायन
उन्मूलन - रोपण
उष्ण - शीत

उदयाचल - अस्ताचल
उपयुक्त - अनुपयुक्त
उच्च - निम्न
एड़ी - चोटी
ऐहिक - पारलौकिक
औचित्य - अनौचित्य
एक - अनेक
एकत्र - विकीर्ण
एकता - अनेकता
एकाग्र - चंचल
ऐतिहासिक - अनैतिहासिक
औपचारिक - अनौपचारिक
ऋजु - वक्र
ऋत - अनृत
कटु - सरल
कनिष्ट - जयेष्ट
कृष्ण - शुक्ल
कुटिल - सरल
कृत्रिम - अकृत्रिम
करुण - निष्ठुर
कायर - वीर
कुलीन - अकुलीन
क्रय - विक्रय
कल्पित - यथार्थ
कृतज्ञ - कृतघ्न
कोप -कृपा
क्रोध - क्षमा
कृश - स्थूल
क्रिया - प्रतिक्रिया
खण्डन - मण्डन
खरा - खोटा
खाद्य - अखाद्य
गुप्त - प्रकट
गरल - सुधा
गम्भीर - वाचाल

गुरु - लघु
गौरव - लाघव
गोचर - अगोचर
गुण - दोष
ग्राम्य - नागर
घृणा - प्रेम
चिरंतन - नश्वर
चल - अचल
चंचल - अचंचल
चिर - अचिर
जीवन - मरण
जाग्रत - सुप्त
जंगम - स्थावर
जागरण - सुषुप्ति
ज्योति - तम
तरुण - वृद्ध
तृप्त - अतृप्त
तृष्णा - तृप्ति
तीक्ष्ण - कुंठित
दण्ड - पुरस्कार
दानी - कृपण
दुरात्मा - महात्मा
देव - दानव
दिन - रात
धृष्ट - विनीत
निरर्थक - सार्थक
निर्दय - सदय
निषिद्ध - विहित
नैसर्गिक - कृत्रिम
निष्काम - सकाम
परतन्त्र - स्वतन्त्र
प्राचीन - नवीन
प्राची - प्रतीची
प्रभु - भृत्य
प्रसाद - अवसाद

पूर्ववर्ती - परवर्ती
पाश्चात्य - पौवार्त्य
बंजर - उर्वर
भला - बुरा
भूत - भविष्य
मुख्य - गौण
मनुज - दनुज
मूक - वाचाल
मन्द - तीव्र
मौखिक - लिखित
योगी -भोगी
युद्ध - शान्ति
यश - अपयश
योग्य - अयोग्य
राजा - रंक
रक्षक -भक्षक
रुग्ण - स्वस्थ
रुदन - हास्य
रिक्त - पूर्ण
लौकिक - अलौकिक
लम्बा - चौड़ा
व्यास - समास
विख्यात - कुख्यात
विधि - निषेध
विपन्न - सम्पन्न
विपदा - सम्पदा
वृष्टि - अनावृष्टि
शासक - शासित
शिष्ट - अशिष्ट
शिख- नख
श्याम - श्वेत
शोक - हर्ष
शोषक - पोषक
सत्कार - तिरस्कार
संक्षेप - विस्तार

सूक्ष्म - स्थूल
संगठन - विघटन
संयोग - वियोग
सुमति - कुमति
सत्कर्म - दुष्कर्म
सामिष - निरामिष
स्मरण - विस्मरण
संसदीय - असंसदीय
सृजन - संहार
क्षय - अक्षय
क्षुद्र - विराट
ज्ञेय - अज्ञेय
स्वीकृति - अस्वीकृति
भौतिक - आध्यात्मिक

Ekarthak Shabd (एकार्थक शब्द)

एकार्थक (सामान अर्थ) प्रतीत होने वाले शब्दों को एकार्थक शब्द कहते हैं |

Example :

#	शब्द	अर्थ
1	अपराध	सामाजिक एवं सरकारी कानून का उल्लंघन।
	पाप	नैतिक एवं धार्मिक नियमों को तोड़ना।
2	अमूल्य	जो चीज मूल्य देकर भी प्राप्त न हो सके।
	बहुमूल्य	जिस चीज का बहुत मूल्य देना पड़ा।
3	अस्त्र	जो हथियार हाथ से फेंककर चलाया जाए। जैसे-बाण।
	शस्त्र	जो हथियार हाथ में पकड़े-पकड़े चलाया जाए। जैसे-कृपाण।
4	आज्ञा	बड़ों का छोटों को कुछ करने के लिए आदेश।
	अनुमति	प्रार्थना करने पर बड़ों द्वारा दी गई सहमति।
5	मंत्रणा	गोपनीय रूप से परामर्श करना।
	परामर्श	पूर्णतया किसी विषय पर विचार-विमर्श कर मत प्रकट करना।
6	स्वागत	किसी के आगमन पर सम्मान।

	अभिनंदन	अपने से बड़ों का विधिवत सम्मान।
7	अहंकार	अपने गुणों पर घमंड करना।
	अभिमान	अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा समझना।
	दंभ	अयोग्य होते हुए भी अभिमान करना।
8	महिला	कुलीन घराने की स्त्री।
	पत्नी	अपनी विवाहित स्त्री।
	स्त्री	नारी जाति की बोधक।
9	अलौकिक	जो इस जगत में कठिनाई से प्राप्त हो। लोकोत्तर।
	अस्वाभाविक	जो मानव स्वभाव के विपरीत हो।
	असाधारण	सांसारिक होकर भी अधिकता से न मिले। विशेष।
10	आनंद	खुशी का स्थायी और गंभीर भाव।
	आह्लाद	क्षणिक एवं तीव्र आनंद।
	उल्लास	सुख-प्राप्ति की अल्पकालिक क्रिया, उमंग।
	प्रसन्नता	साधारण आनंद काभाव।
11	ईर्ष्या	दूसरे की उन्नति को सहन न कर सकना।
	डाह	ईर्ष्यायुक्त जलन।
	द्वेष	शत्रुता का भाव।
	स्पर्धा	दूसरों की उन्नति देखकर स्वयं उन्नति करने का प्रयास करना।
12	अनुनय	किसी बात पर सहमत होने की प्रार्थना।
	विनय	अनुशासन एवं शिष्टतापूर्ण निवेदन।
	आवेदन	योग्यतानुसार किसी पद के लिए कथन द्वारा प्रस्तुत होना।
	प्रार्थना	किसी कार्य-सिद्धि के लिए विनम्रतापूर्ण कथन।
13	इच्छा	किसी वस्तु को चाहना।
	उत्कंठा	प्रतीक्षायुक्त प्राप्ति की तीव्र इच्छा।
	आशा	प्राप्ति की संभावना के साथ इच्छा का समन्वय।
	स्पृहा	उत्कृष्ट इच्छा।
14	सुंदर	आकर्षक वस्तु।
	चारु	पवित्र और सुंदर वस्तु।
	रुचिर	सुरुचि जाग्रत करने वाली सुंदर वस्तु।
	मनोहर	मन को लुभाने वाली वस्तु।

15	मित्र	समवयस्क, जो अपने प्रति प्यार रखता हो।
	सखा	साथ रहने वाला समवयस्क।
	सगा	आत्मीयता रखने वाला।
	सुहृदय	सुंदर हृदय वाला, जिसका व्यवहार अच्छा हो।
16	अंतःकरण	मन, चित्त, बुद्धि, और अहंकार की समष्टि।
	चित्त	स्मृति, विस्मृति, स्वप्न आदि गुणधारी चित्त।
	मन	सुख-दुख कीअनुभूति करने वाला।
17	नमस्ते	समान अवस्थावालो को अभिवादन।
	नमस्कार	समान अवस्थावालों को अभिवादन।
	प्रणाम	अपने से बड़ोंको अभिवादन।
	अभिवादन	सम्माननीयव्यक्ति को हाथ जोड़ना।
18	अनुज	छोटा भाई।
	अग्रज	बड़ा भाई।
	भाई	छोटे-बड़े दोनोंके लिए।